पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पु

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२०, अंकः-०८, फरवरी, सन्-२०१८, सं०-२०७४ वि०, दयानंदाब्द १६३, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११८; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

इतिहास के झरोखे से

"मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी!"

रानी के इन शब्दों से दीवान-ए-खास गूँज गया!!

-वृंदावनलाल वर्मा-

रानी गम्भीरतापूर्वक सारी स्थिति का अवलोकन कर रही थीं। वे झाँसी राज्य को अपने किसी उद्देश्य की पूर्ति का साधन-मात्र समझती थीं। झाँसी का राज्य उनके लिए सुरपुर न था-किंतु, जिस सुरपुर के पाने की उनके मन में लालसा थी, झाँसी उसकी एक सीढ़ी-मात्र थी।

पति के देहान्त के बाद से रानी की दिनचर्या इस प्रकार हो गई।

वह नित्य प्रातःकाल चार बजे स्नान करके आठ बजे तक महादेव का पूजन करतीं और उसी समय गवैए भजन गायन सुनाते। फिर ११ बजे तक महल के समीपवर्ती खुले आँगन में घोड़े की सवारी, तीरंदाजी, नेजा चलाना, दौड़ते हुए घोड़े पर चढ़े-चढ़े, दाँतों से लगाम पकड़कर, दोनों हाथों से तलवार भाँजना, बंदूक से निशाना लगाना, मलखंब, कुश्ती इत्यादि करती थीं और अपनी सहेलियों तथा नगर से आनेवाली कुछ स्त्रियों को यह सब काम सिखाती थीं। इनमें भाऊ बख्शी की पत्नी प्रमुख थी और बहुधा आनेवालों में झलकारी कोरिन।

ग्यारह बजे के उपरांत रानी फिर स्नान करतीं और भूखों को खिलाकर तथा कुछ दान-धर्म करके तब भोजन करतीं। भोजन उपरांत थोड़ा-सा विश्राम। फिर तीन बजे तक ग्यारह सौ रामनाम लिखकर आटे की गोलियाँ मछलियों को खिलातीं। उस समय वे किसी से बातचीत नहीं करती थीं। और न कोई उस समय उनके पास बैठ सकता या आ सकता था। वे किसी गूढ़ चिंतन, किसी गूढ़ विचार में निमग्न रहती थीं।

तीन बजे के उपरांत संध्या तक फिर वे ही व्यायाम कसरतें-शरीर को फौलाद बनाने की क्रियाएँ।

संध्या के उपरांत आठ बजे तक कथावार्ता, पुराण, भगवद्गीता का अठारहवाँ अध्याय और भजन सुनतीं। इसके बाद एक घंटा आगंतुकों को भेंट के लिए दिया जाता था। तीसरी बार स्नान करतीं। इसके बाद थोड़े समय तक इष्टदेव का एकांत ध्यान। फिर ब्यालू भोजन। पश्चात् सुंदर, मुंदर और काशीबाई के साथ थोड़ा-सा वार्तालाप और फिर ठीक दस बजे शयन। वे समय की बहुत पाबंद थीं। शिथिलता तो छूकर नहीं निकली थी।

राज्य मिलेगा या न मिलेगा-इन दोनों के व्यवधान में वे महीने चले जा रहे थे। मोरोपंत तांबे और कर्मचारी यथावत् कार्य कर रहे थे। एलिस वर्ग अपना पाया मजबूत बनाने की तैयारी करता चला जा रहा था, बहुत सतर्कता, बड़ी सावधानी के साथ।

जब कइ महीने बीत गए और डलहौजी का उत्तर न आया तब मोरोपंत, नाना भोपटकर इत्यादि की सम्मति से एलिस और मालकम के द्वारा एक खरीता और भेजा। उसमें पुरानी संधियों को दुहराया गया और जिनके सामने गोद ली गई थी, उनके नाम प्रकट किए गए।

एलिस ने सिफारिश की। लिखा, 'ओरछा राज्य को दत्तक की स्वीकृति दी गई। जैसा ओरछा राज्य वैसा झाँसी राज्य। एक को अनुमति देना और दूसरे को न देना अनुचित मालूम होता है।'

यह बात नहीं कि एलिस रानी की अर्जी का स्वीकृत किया जाना पसंद करता हो। वह ओरछा राज्य को दत्तक की स्वीकृति मिलने पर कुढ़ गया था-एक अच्छा-खासा ग्रास कंपनी सरकार के मुँह से छुटका दिया गया।

कई महीने उपरांत डलहौजी अवध के दौरे से कलकत्ता लौटा। झाँसी की मिसिल पेश हुई। जगह-जगह ऐसे उद्गार जो नाक तक नफरत पैदा करें।

बुंदेलखंड में कंपनी के राज्य की स्थापना हमारे पुरखों की सहायता से हुई है। हमारी राजभक्ति की कदर की जानी चाहिए। जरूर! अब किस साधना के लिए राजभक्ति की अटक है? संधियाँ पवित्र होती हैं। बेशक! तुम पेशवा के नौकर थे। पेशवा हमसे हारा और उसने अपना स्वामित्व हवाले किया। अब तुम हमारे नौकर हुए। मर्जी हमारी, मानें हम तुम्हारी गोद-वोद को, या न मानें।

डलहौजी सोचता-सोचता जिस निष्कर्ष पर पहुँचा, उसकी काउंसिल भी उससे सहमत हो गई।

डलहौजी ने झाँसी की मिसिल पर २७ फरवरी, सन् १८५४ को हुकुम चढ़ाया। 'झाँसी राज्य पेशवा का आश्रित

राज्य था। १८०४ की संधि में शिवराव भाऊ ने इस बात को कबूल किया था। हमको ऐसे आश्रित राज्यों में गोद मानने, न मानने का अधिकार है। रामचंद्र राव ने १८३५ में, जिसको हमने सन् १८३२ में राजा की उपाधि दी थी, मरने से एक दिन पहले किसी को गोद लिया था। वह गोद ब्रिटिश सरकार ने नहीं मानी थी। हम दामोदरराव की गोद को मानने के लिए बाध्य नहीं हैं। इसलिए झाँसी राज्य खालसा किया जाता है, और अंग्रेजी राज्य में मिलाया जाता है। पॉलिटिकल एजेंट की सिफारिश के अनुसार रानी को मासिक वृत्ति दी जायगी।'

इस हुकुम को कानूनी लिबास ७ मार्च सन् १८५४ को मिल गया।

मालकम के पास डलहौजी की आज्ञा आ गई और उसने बिना विलंब नीचे लिखा हुआ इश्तिहार एलिस के पास भेज दिया-

'दत्तक को गवर्नर जनरल ने नामंजूर किया है। इसलिए भारत सरकार की ७ मार्च, सन् १८५४ की आज्ञा के अनुसार झाँसी का राज्य ब्रिटिश इलाके में मिलाया जाता है। इश्तिहार के जरिए सब लोगों को सूचना दी जाती है कि संप्रति झाँसी प्रदेश का शासन मेजर एलिस के अधीन किया जाता है। इस प्रदेश की सब प्रजा अपने को ब्रिटिश सरकार के अधीन समझे और मेजर एलिस को कर दिया करे और सुख तथा संतोष के साथ जीवन-निर्वाह करे। १३-३-१८५४ ह. मालकम।'

प्रजा का सुख-संतोष! उसका कल्याण!! राजनीति के पाखंड को कैसे बढ़िया मुहाविरे मिले!!!

मालकम ने इस घोषणा को बहुत लुका-छिपाकर एलिस के पास भेजा और उसको हिदायत की कि बहुत सावधानी के साथ काम किया जाए, क्योंकि उसे मालूम था कि रानी जनप्रिय हैं, कहीं झाँसी की जनता दंगा-फसाद न कर बैठे। इसलिए एलिस ने सेना द्वारा झाँसी का कठोर प्रबंध किया।

एलिस ने होशियारी के साथ उस घोषणा को एक जेब में रखा और दूसरी में पिस्तौल। सशस्त्र अंगरक्षकों को साथ लेकर रानी के पास किलेवाले महल में पहुँचा। रानी को सूचना दे दी गई थी कि छोटे साहब के पास बड़े लाट की आज्ञा आ गई है, उसी को सुनाने आ रहे हैं। मोरोपंत इत्यादि बहुत दिन से आशा लगाए बैठे थे। दीवाने- खास में नियुक्त समय पर आ गए। रानी परदे के पीछे बैठीं। दीवाने-खास में एक ऊँची कुरसी पर दामोदरराव।

एलिस दृढ़, पर अदृढ़ साहस के साथ दीवाने-खास में प्रविष्ट हुआ।

वृन्दावनलाल वर्मा

मोरोपंत इत्यादि ने बहुत विनीत भाव के साथ अभिवादन किया। दीवाने-खास में इत्रपान इत्यादि सजे-सजाए रखे थे। बुर्जों पर तोपों में सलामी दागने के लिए बारूद डाल दी गई थी। एलिस होंठ से होंठ सटाये आया और अपने माथे की शिकनों को समेटकर अभिवादन का उत्तर देता हुआ बैठ गया।

मोरोपंत ने विनीत भाव से कहा, 'साहब, आपको यहाँ तक आने में बहुत कष्ट हुआ होगा।'

मुश्किल से एलिस का कंठ मुखरित हुआ, 'मेरा कर्तव्य है। दुखदायक कर्तव्य है।'

सबलोग सन्नाटे में आ गए।

एलिस ने कहा, 'महारानी साहब आ गई हैं?'

(शेष पृष्ठ 3 पर)

विनय पीयूष

तुम से बढ़कर और न कोई !

आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः।
न त्वामिन्द्रातिरिच्यते।।

(साम. पू. अ.2/द.9/मं.4)

तुम से बढ़कर और न कोई !

जैसे नदियों का
कल-कल जल,
मिलता सागर में
जा पल-पल,

वैसे मेरे चंचल मन का,
तुमसे बढ़कर ठौर न कोई !

काव्यानुवाद : अमृत खरे

आर्य्य लोक वार्ता : पत्र नहीं स्वाध्याय है - एक नया अध्याय है।

सम्पादकीय

न्याय पथ के दो पथिक

आज का हिन्दू अपने उन बहादुर पूर्वजों की संतति है, जिन्होंने लगभग सात शताब्दियों तक विदेशी सल्तनत के भीषण हृदय-द्रावक अत्याचारों के सामने अपना सर नहीं झुकाया और स्वधर्म, स्वदेश, स्वसंस्कृति की रक्षा की। अपना विवेक और संयम बनाये रखा किन्तु आधुनिक युग में उन्हीं की कायरतापूर्ण, अनुत्तरदायित्व युक्त अविवेकग्रस्त हरकतें कभी कभी हैरानी में डाल देती हैं। उदाहरण के तौर पर अभी पिछले दिनों 'पद्मावती' फिल्म के विरोध में जिस तरह के हिंसक प्रदर्शन हुए, घरों दूकानों में आगजनी की गई, सरकारी बसों तथा अन्य वाहनों को क्षतिग्रस्त किया गया, ट्रेनों के आवागमन में बाधा पहुँचायी गयी, यहाँ तक कि उन बसों को भी नहीं बख्श गया जिसमें स्कूली बच्चे बैठे हुए थे। इन कृत्यों को उन लोगों ने अंजाम दिया, जो यह कहते हुए नहीं थकते कि 'गर्व से कहो, हम हिन्दू हैं।' इतना ही नहीं, जिस वंदनीया मातृशक्ति की प्रतीक भारतीय फिल्मों की शीर्ष अभिनेत्री दीपिका ने महारानी पद्मावती के रोल को जीवन्त बना दिया, उसके नाक कान काटने तथा फिल्म निर्माता संजय लीला भंसाली की गर्दन काटने वाले को करोड़ों के इनाम देने के फतवे जारी किए। वे यह भी भूल गये कि अपने इन कृत्यों से वे हिन्दुत्व के रक्षक न होकर अलाउद्दीन के सैनिकों की पंक्ति में खड़े हुए नजर आ रहे हैं। एक शायर के शब्दों में-

कभी खुद जोर से अपनी ही,
गिर जाता है जोरावर।
मेरे कातिल कहीं तू अपना ही
कातिल न हो जाये।

आज सारे भारत में 'पद्मावत' फिल्म प्रदर्शित हो रही है और हिन्दुत्व के जिन ध्वजवाहकों ने अपने ही देश और समाज की सम्पत्ति को क्षतिग्रस्त किया था, उन शूरमाओं को प्रायश्चित की जगह नहीं मिल रही है।

पाखंड और अंधविश्वास ग्रस्त विवेक रहित हिन्दू समाज का एक विस्मयकारी उज्ज्वल पक्ष भी है। वह यह है कि हजारों, लाखों की भीड़ में एक दो कर्मवीर और धर्मवीर भी होते हैं, जो सत्य और न्याय के मार्ग पर अडिग रहते हैं और अगणित बाधाओं और विरोधों का सामना करते हुए अपने कर्तव्य का निर्वहन करने में सफल होते हैं। वे महाराज भर्तृहरि के निम्नांकित सूक्ति को चरितार्थ कर देते हैं जो सूक्ति सत्यान्वेषक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज को अत्यधिक प्रिय थी और जिसे उन्होंने बार बार उद्धृत किया है। वह सूक्ति सत्य और न्याय पर चलने वालों के लिए पाथेय के रूप में सुरक्षित है, इस प्रकार है-

निन्दन्तु नीति निपुणाः यदि वा स्तवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा-
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

(नीतिनिपुण लोग निन्दा करें या स्तुति, धन सम्पदा रहे या न रहे, मत्यु आज ही आये या युगों बाद, धीर पुरुष न्याय के पथ से कभी विचलित नहीं होते।)

पद्मावती फिल्म के विरोधी स्वरों और तथाकथित हिन्दुत्व की हुंकारों के बीच इसी हिन्दू समाज के दो ऐसे व्यक्ति थे जो न्यायपथ पर अडिग, अविचल रहे- योगी आदित्यनाथ और डॉ.रजत शर्मा।

अनेक भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्री जब सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुरूप कार्य करने में अक्षम सिद्ध हो रहे थे- उ.प्र.के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 'अभयं मित्रादभयममित्रादभयं' की वेदवाणी के अनुरूप एक बहुत सधा हुआ बयान दिया तथा उ.प्र. में फिल्म 'पद्मावत' पर किसी प्रकार का प्रतिबंध लगाने से साफ मना कर दिया। यहाँ तक कि फिल्म प्रदर्शन की तिथि २५ जनवरी के एक दिन पूर्व करणी सेना के कमांडर श्री कालवी की भेंट भी उन्हें न्याय पथ से नहीं डिगा सकी, उ.प्र.की जनता भी योगी जी के साथ खड़ी रही और प्रदेश में सर्वत्र निर्बाध फिल्म का प्रदर्शन हुआ। इससे पूर्व भी योगी आदित्यनाथ अपने विवेकपूर्ण साहस का प्रदर्शन करते रहे हैं, ताजमहल को प्रेम सौन्दर्य का राष्ट्रीय स्मारक बताकर योगी जी ने अपनी उदारतापूर्ण प्रवृत्ति का परिचय दिया। उन्होंने मदरसों के बारे में बड़ अच्छा बयान दिया- 'मदरसों पर पाबंदी नहीं, उन्हें आधुनिक ज्ञान विज्ञान का केन्द्र बनाने की जरूरत है।' इतना ही नहीं, जिस तारीख को नोएडा यात्रा से पूर्व मुख्यमंत्री गण अशुभ मानकर कतराते रहे। शकुन अपशकुन की परवाह न करते हुए उसी तारीख को योगी जी ने नोएडा की यात्रा की तथा अनेक योजनाओं का शुभारम्भ किया। वस्तुतः मुख्यमंत्री का पद योगी आदित्यनाथ को ही शोभा देता है, भ्रष्ट अवसरवादियों को नहीं।

न्याय पक्ष के दूसरे पथिक हैं इंडिया टेलीविजन के संचालक रजत शर्मा। 'आपकी अदालत' जैसे कार्यक्रम का सफल संचालन करके रजत शर्मा पहले ही एक इतिहास रच चुके हैं। 'पद्मावती' फिल्म के विरोधों के बवण्डरों के बीच रजत शर्मा वह पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने घोषणा की फिल्म में कुछ भी आपत्ति जनक नहीं है। दीपिका, शाहिद कपूर, रणवीर सिंह इत्यादि का अभिनय प्रशंसनीय है। वरिष्ठ पत्रकार डॉ.वेदप्रताप वैदिक ने भी शर्मा जी का साथ दिया। डॉ.रजत शर्मा के सत्साहस, सद्विचार, सत्संकल्प और दृढ़ता की जितनी सराहना की जाय कम है। योगी आदित्यनाथ और रजत शर्मा सच्चे राष्ट्ररत्न हैं, भारत इन पर गर्व कर सकता है और माँ भारती अपने को कृतार्थ अनुभव कर सकती है।

एक वे हैं जो पतवार को मझधार बना देते हैं,
एक वे हैं जो मझधार को पतवार बना देते हैं,
एक वे हैं जो तलवार को बना देते हैं कलम-
एक वे हैं जो कलम को ही तलवार बना देते हैं।।

देवेन्द्र सिंह आर्य

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१८३

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में अष्टम समुल्लास का अंश

(प्रश्न) जब ये जीव और प्रकृतिस्थ तत्व अनादि और ईश्वर के बनाये नहीं हैं तो ईश्वर का अधिकार भी इन पर न होना चाहिये क्योंकि सब स्वतंत्र हुए?

(उत्तर) जैसे राजा और प्रजा समकाल में होते हैं और राजा के अधीन प्रजा होती है वैसे ही परमेश्वर के अधीन जीव और जड़ पदार्थ हैं। जब परमेश्वर सब सृष्टि का बनाने, जीवों के कर्मफलों के देने, सब का यथावत् रक्षक और अनन्त सामर्थ्य वाला है तो अल्प सामर्थ्य भी और जड़ पदार्थ उसके अधीन क्यों न हों? इसलिए जीव कर्म करने में स्वतन्त्र परन्तु कर्मों के फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र है। वैसे ही सर्वशक्तिमान् सृष्टि, संहार और पालन सब विश्व का कर्त्ता है।

इसके आगे विद्या, अविद्या, बन्ध और मोक्ष के विषय में लिखा जायेगा। यह आठवां समुल्लास पूरा हुआ।

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृते
सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविभूषिते
सृष्टयुत्पत्तिस्थितिप्रलयविषये
अष्टमः समुल्लासः
सम्पूर्णः।। ८।।

विद्या अविद्या

अथ नवमसमुल्लासारम्भः

अथ विद्याऽविद्याबन्धमोक्षविषयान् व्याख्यास्यामः

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयꣳसह। अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।।

यजुः./अ.४०/मं.१४ ।।

जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तर के विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है। अविद्या का लक्षण-

अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्य-शुचिसुखात्मख्यातिरविद्या।।

यह योगसूत्र का वचन है- जो अनित्य संसार और देहादि में नित्य अर्थात् जो कार्य जगत् देखा, सुना जाता है; सदा रहेगा, सदा से है और योगबल से यही देवों का शरीर सदा रहता है वैसी विपरीत बुद्धि होना अविद्या का प्रथम भाग है।

अशुचि अर्थात् मलमय स्यादि के और मिथ्याभाषण, चोरी आदि अपवित्र में पवित्र बुद्धि दूसरा, अत्यन्त विषयसेवन रूप दुःख में सुखबुद्धि आदि तीसरा, अनात्मा में आत्मबुद्धि करना अविद्या का चौथा भाग है। यह चार प्रकार का विपरीत ज्ञान अविद्या कहाती है।

इससे विपरीत अर्थात् अनित्य में अनित्य और नित्य में नित्य, अपवित्र में अपवित्र और पवित्र में पवित्र, दुःख में दुःख, सुख में सुख, अनात्मा में अनात्मा और आत्मा में आत्मा का ज्ञान होना विद्या है। अर्थात् 'वेत्ति यथावत्तत्त्वं पदार्थ स्वरूपं यया सा विद्या- यया तत्त्वस्वरूपं न जानाति भ्रमादन्यस्मिन्नन्यन्निश्चिनोति साऽविद्या' जिससे पदार्थों का यथार्थ स्वरूप बोध होवे वह विद्या और जिससे तत्त्व स्वरूप न जान पड़े अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहाती है। *(क्रमशः)*

वेदांजलि

प्रथमा संस्कृति

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम। सा प्रथमा सँस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रोऽअग्निः।।

-यजुः7/14

शब्दार्थ-

हे (**देव सोम**) दिव्यगुणयुक्त, चराचर जगत् के रचयिता! (**सुवीर्यस्य**) महान् बलयुक्त (**ते**) आपके (**अच्छिन्नस्य**) अखण्ड, अक्षय (**रायस्पोषस्य**) ज्ञानैश्वर्य के परिपोषक [और] (**ददितारः स्याम**) देनेवाले, प्रचार करनेवाले हम सदा रहें। (**सा**) वह (**प्रथमा**) सबसे पहली और उत्तम (**विश्ववारा**) सम्पूर्ण संसार के द्वारा स्वीकार करने योग्य (**संस्कृतिः**) विद्या-सुशिक्षाजनित नीति, व्यवहारपद्धति है, (**वरुणः**) वरने योग्य, स्वीकार करने योग्य (**अग्निः**) प्रकाशस्वरूप (**सः**) वह, आप (**प्रथमः**) आदिमूल और उत्कृष्ट (**मित्रः**) हितभावना से त्राण करनेवाले, प्राणिमात्र का कल्याण करने वाले आप ही हैं।

व्याख्या-

मंत्र में कहा गया है कि इस चाराचर जगत् का आदिमूल, अक्षय ज्ञानैश्वर्य का भण्डार सच्चे मित्र के समान हितसाधक वह प्रभु ही है। उसीने हमारे संसार में आते ही अपनी सर्वोत्कृष्ट संस्कृति लोक और परलोक साधने के लिए हमें दी। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने और समाज के कल्याण के लिए उस उत्तम धर्ममार्ग को अपनाकर संसार को सन्ताप से बचावें।

जिन परिष्कृत भावनाओं और संस्कारों के आधार पर समाज में मनुष्य अपने व्यवहार से इस प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत करता है कि जिसमें व्यक्ति का केवल अपना स्वार्थ सिद्ध न होकर मानवमात्र का और यथासम्भव प्राणिमात्र का हित हो, उन विचार-परम्पराओं का नाम ही संस्कृति है। संस्कृति-पदवाच्य उत्कृष्ट गुण, व्यक्ति में स्वतः उत्पन्न नहीं होते, अपितु सुशिक्षित अनुभवी माता, पिता, गुरु और समाज के वयोवृद्ध व्यक्तियों की प्रारम्भ से ही प्राप्त होनेवाली सुशिक्षा के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं।

छोटे बच्चे को कोई भी वस्तु दीजिये, यदि वह उसके हाथों की पकड़ में है तो तुरन्त पकड़कर अपने मुँह की ओर ले जाएगा। कुछ बड़ा होने पर वही बालक जिन्हें अपना समझने लगता है, उन्हें अपनी प्रिय वस्तु भी देने लगता है। ये ही विचार आयु के साथ मस्तिष्क के विकसित होने पर उत्तरोत्तर बढ़ते हैं और इनके आधार पर ही परिवार, वर्ग और समाज के भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के साथ व्यवहार के कुछ नियम नियत होते जाते हैं, इन्हें ही एक उन्नत समाज की भाषा में संस्कृति कहा जाता है।

इस विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि अपने के लिए व्यक्ति अपने स्वार्थ की उपेक्षा करके त्याग करने को उद्यत हो जाता है। इस त्याग के परिणामस्वरूप हुई अपनी हानि से और दूसरे के लाभ से उसे दुःख न होकर सुख होता है। इतने उदात्त मानवीय गुणों से अनुप्राणित कोई भी समाज और राष्ट्र सुसंस्कृत और महान् कहलाता है।

समाज और देश की उन्नत और अवनत दशा को मापने का एक ही मापदण्ड है और वह है संस्कृति। संस्कृति की उल्लिखित परिभाषा के आधार पर जब हम वैदिक संस्कृति से अनुप्राणित भारत के अतीतकाल को देखते हैं, तो स्वाभिमान से मस्तक उन्नत हो जाता है। वैदिक संस्कृति में जीवन-यापन का जो उच्च आदर्श रक्खा है, वह संसार को स्वर्गधाम बनानेवाला है।

वेद ने मनुष्य की तो बात ही क्या है, प्राणिमात्र को आत्मतत्त्व की दृष्टि से अपना बताया है-

**यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः।।**

'जो ज्ञानी समस्त प्राणियों के सुख-दुःख को अपने सुख-दुःख जैसा समझता है, उस समदर्शी मनुष्य को शोक और मोह नहीं होता।' इसी मंत्र के भाव के आधार पर गीता में कहा-

**विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गविहस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।।**

'विद्वान् ब्राह्मण, गौ, हाथी, कुत्ते और चाण्डाल में समान रूप से सुख-दुःख अनुभव करनेवाला आत्मा तो एक-जैसा ही है।' महाभारत में व्यास ऋषि ने धर्म का मुख्य स्वरूप बताते हुए कहा-

**श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषान्न समाचरेत्।।**

'धर्म का सार सुनो और सुनके उस पर आचारण करो। वह तत्त्व की बात यह है कि जिस आचरण को तुम अपने लिए पसन्द नहीं करते, उसे दूसरों के साथ कभी मत करो।'

रघुवंश में रघु के राज्य का वर्णन करते हुए कालिदास लिखते हैं कि जब रघु के पुत्र का जन्म हुआ तो पुत्र-प्राप्ति की प्रसन्नता में महाराज ने आदेश दिया कि आज के दिन हमारे बन्दीगृहों में जितने भी बन्दी हों उन्हें राजकुमार के जन्मोत्सव की प्रसन्नता में छोड़ दिया जाय। इस पर कालिदास लिखते हैं-

**'न संयतस्तस्य बभूव रक्षि-
तुर्विसर्जयेद्यं सुतजन्महर्षितः।'**

-'प्रजा के रक्षक रघु के राज्य में जेलखानों में कोई बन्दी नहीं था, जिसे बन्धनमुक्त करके वह पुत्रोत्सव में वृद्धि कर लेता।' इस कारण कुछ हाथियों की शृंखलाएँ कटवा कर तथा कुछ घोड़ों के रस्से खुलवाकर उन्हें स्वतंत्र करके पुत्रोत्सव को मनाया।

अतः मंत्र में कहा गया है कि इस प्रथमा संस्कृति के आधार पर ही विश्व में सुख और शान्ति स्थापित हो सकती है। *('श्रुति सौरभ' से साभार)*

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-१०७

विचित्रोऽयं धर्मः प्रसरति महाकाल इव किं
धृतः सत्तालुब्धैः कपटपरिधानाय जगति।
न कश्चिद् बन्धुर्वा प्रिय इह सजात्योऽपि च रिपुः
हुसैनं दौहित्रं विवशमपि ये ध्नन्ति तृषितम्।।

यह धर्म बड़ा विचित्र है !
कहीं महाकाल या यमराज की तरह
तो नहीं फैलता है?
कहीं सत्ता के लोभियों ने
अपने कपट पर
परदा डालने के लिए इसे
धर्म का रूप तो नहीं दे दिया है?
इनका कोई सगा नहीं होता और न
कोई प्रिय होता है !
ये अपने सजातीय और
धर्म-बन्धुओं को भी
शत्रु ही मानते हैं !!
हुसैन तो धेवता था मोहम्मद का
वह करबला के मैदान में अकेला
और विवश था !
उसे इन्होंने प्यासा मार दिया !!

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

सत्संग
जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

(१) यह आवश्यक नहीं है कि एक माता पिता के सभी बच्चे संस्कारवान् बनें, कुछ बच्चे बिगड़ भी जाते हैं जिसके कारण माता पिता या शिक्षकों पर उँगली उठाई जाती है। ऐसा क्यों होता है?

(२) मैं आभारी रहूँगा यदि 'अहं ब्रह्मास्मि' तथा 'हम ईश्वर के अंश हैं' इन वाक्यों पर प्रकाश डालेंगे?

-पाल प्रवीण, योगाश्रम, एम.एस.120, अलीगंज, सेक्टर-डी, लखनऊ

समाधान :

(1) (अ) किसी बालक के व्यक्तित्व के विकास को माता पिता शिक्षक की भूमिका के अलावा पूर्व जन्मों के शुभ या अशुभ कर्म भी प्रभावित करते हैं। जहाँ माता पिता शिक्षक के प्रयत्नों के बावजूद भी बच्चे संस्कारवान् नहीं बन पाते हैं- तो यह समझना चाहिए कि पूर्व जन्म के अशुभ कर्म उसके विकास में बाधक बन रहे हैं किन्तु जिन बच्चों के विकास में माता पिता शिक्षक के मार्गदर्शन के साथ ही पूर्व जन्म के शुभ कर्म पूर्ण सहयोग कर रहे होते हैं- उसका सही दिशा में विकास होता रहता है। मनुष्य को कृत कर्मों का फल तो भोगना ही पड़ता है और इन्हीं कर्मों के फलस्वरूप 'जाव्यायुर्भोगाः' (योगदर्शन) के अनुरूप मनुष्य को वर्तमान जीवन की प्राप्ति होती है, माता पिता मिलते हैं, और भोग मिलते हैं। शास्त्र पुकार पुकार कर कहते हैं- 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'- शुभ और अशुभ कर्मों का फल अवश्य ही भोगना है। इस जन्म में या अगले जन्म में- यह सब ईश्वरीय व्यवस्था निर्धारित करती है। इसके लिए दैनिक उपासना इत्यादि का विधान किया जाता है।

(ब) माता पिता शिक्षक की भूमिका बच्चों के विकास में कितनी सार्थक रही है इसका आकलन *माता पिता शिक्षक स्वयं कैसे कर सकते हैं?* कई बार माता पिता शिक्षक बालक का समुचित मार्गदर्शन करने में असफल रहते हैं जबकि वे अपनी भूमिका की आत्म प्रशंसा करते रहते हैं। माता पिता को सोचना होगा कि क्या वे बच्चे के गर्भाधान से लेकर उपनयन इत्यादि सभी संस्कार उचित समय और विधि से करते रहे हैं? यदि माता पिता शिक्षक सही कार्यपालन करने में असफल रहते हैं तथापि प्रयत्न जारी रखना चाहिए क्योंकि उनके सत्प्रयत्न बालक के जीवन निर्माण में भले ही सहायक न हों- उनके अपने शुभ कर्मों की तालिका में अभिवृद्धि हो सकती है। उन्हें इस बात का संतोष तो होगा ही कि उन्होंने अपने दायित्व का सम्यक् निर्वाह किया है। गीता के कथनानुसार- 'कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'।

(2) 'अहं ब्रह्मास्मि' 'मैं ब्रह्म हूँ' - यह कोई वेदवाक्य नहीं है। वरन् आद्य शंकराचार्य के अद्वैतवाद की व्याख्या मात्र है। शंकराचार्य के अद्वैतवाद में ब्रह्म को ही सबकुछ माना गया- ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या सर्व खल्विदं ब्रह्म यहाँ प्रकृति और जीव भी ब्रह्म है। (शंकराचार्य के समय में बौद्धमत का प्राबल्य था, जिसमें ब्रह्म की सत्ता को ही नकार दिया गया था तथा जड़ जगत या प्रत्यक्ष सत्ता को ही सबकुछ माना गया- इसके विपरीत शंकराचार्य ने ब्रह्म को ही सबकुछ माना जगत को माया अथवा मिथ्या माना गया है। यहाँ तक 'जीव ही ब्रह्म है' इस सिद्धान्त का निरूपण किया)

शंकराचार्य के 'अहं ब्रह्मास्मि' या अद्वैतवाद का विरोध उनके परवर्ती आचार्यों ने किया। माध्वाचार्य ने द्वैतवाद का प्रवर्तन किया अर्थात् जीव की ब्रह्म से भिन्न सत्ता को मान्यता दी। आधुनिक युग में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने त्रैतवाद अर्थात् जीव, ब्रह्म के साथ प्रकृति की भी अनादि सत्ता के रूप में मान्यता दी। किन्तु निम्बार्क (द्वैताद्वैत, बल्लभाचार्य (शुद्धाद्वैत) तथा रामानुजाचार्य (विशिष्टा द्वैत) ने अद्वैतवाद को संशोधन के साथ स्वीकार किया। रामानुजाचार्य ने कहा- जीव और ब्रह्म में अंशांशी का सम्बन्ध है अर्थात् जीव ब्रह्म का अंश है।

ब्रह्म से जीव की पृथक् सत्ता न होकर जीव को ब्रह्म का अंश मानना- यह स्वामी रामानुजाचार्य का सिद्धान्त है जिससे दार्शनिक जगत में विशिष्टाद्वैत कहा जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी इस मत का समर्थन करते हुए मिलते हैं और कहते हैं-

ईश्वर अंश जीव अविनाशी।
चेतन अमल सहज सुखराशी।।
सो मायावश बँधु गोसाईं।
नाचत नट मर्कट की नाईं।।

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा समर्थित स्वामी रामानुजाचार्य के इस सिद्धान्त का महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती निराकरण करते हैं और कहते हैं- ब्रह्म कोई भौतिक वस्तु नहीं जिसके अंश या टुकड़े किये जा सकते हों। ब्रह्म तो अविभाज्य है। अतः जीव ब्रह्म का अंश कैसे हो सकता है?

जीव को ब्रह्म का अंश मानना एक भ्रान्त धारणा है। जीव और ब्रह्म में 'अंश' 'अंशी' का नहीं, उपासक और उपास्य का संबन्ध है। उपासना द्वारा मनुष्य (जीव) ब्रह्म का सान्निध्य प्राप्त कर सकता है, ब्रह्म के गुणों को धारण कर सकता है, यहाँ तक मुक्ति या अमरत्व को भी प्राप्त कर सकता है।

-सम्पादक

(पृष्ठ 1 का शेष....)

मैं अपनी झाँसी...

दीवान ने उत्तर दिया, 'जी साहब, परदे के पीछे विराजमान हैं।'

एलिस ने जेब से मालकमवाली घोषणा निकाली। दरबारियों के कलेजे धक्-धक् करने लगे।

कलेजा थामकर उन लोगों ने घोषणा को सुन लिया। गुलाम गौसखाँ तोपची अनुकूल घोषणा की आशा से दीवाने खास के एक दर के पीछे की तरफ कान लगाए खड़ा था। प्रतिकूल घोषणा को सुन मुँह लटकाए चुपचाप चला गया।

जब घोषणा पढ़ी जा चुकी-मोरोपंत के मुँह से निकला, 'ओफ!'

दीवान के मुँह से, 'हाय!'

और दरबारियों के मुँह से-'अनहोनी हुई'।

दामोदरराव समझने की कोशिश कर रहा था, उसको आभास मिल गया कि कुछ बुरा हुआ है।

यकायक ऊँचे, परंतु मधुर स्वर में रानी ने परदे के पीछे से कहा, 'मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।'

इन शब्दों से दीवाने-खास गूँज गया। वायुमंडल ने उनको अपने भीतर निहित कर लिया।

भारत के इतिहास में वे शब्द दिए गए। झाँसी की कालगी में वे शब्द मणि मुक्ता बनकर चिपक गए।

('वृन्दावन लाल वर्मा के कालजयी ऐतिहासिक उपन्यास 'झाँसी की रानी' से एक जीवंत अंश-साभार)

अक्षर लोक

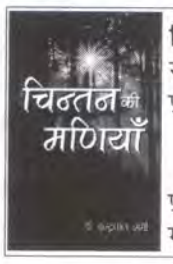

चिन्तन की मणियाँ (लेख संग्रह)
रचनाकार : डॉ.चन्द्रपाल शर्मा
प्रकाशक : डायमण्ड पाकेट बुक्स (प्रा.)लि. X-३०, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II नई दिल्ली-११००२०
प्रस्तुति : पेपरबैक, पृष्ठ : १९२
मूल्य : १९५ रुपये

'चिन्तन की मणियाँ' पुस्तक में डॉ.चन्द्रपाल शर्मा की पैंतीस चिन्तन की मणियाँ संग्रहीत हैं। डॉ.शर्मा का चिन्तन मूल रूप से भारतीय मानस के चरित्र के इर्द-गिर्द घूमता है। 'चरित्र-निर्माण' शीर्षक लेख में वह लिखते हैं कि आज चरित्र अभाव की भयंकर समस्या है। आज राष्ट्र का नेतृत्व करने वाले राजनेता हत्या करते हैं, हत्या करवाते हैं, तस्करी करते हैं या तस्करों को प्रश्रय देते हैं। स्वयं माफिया हैं, बलात्कारी हैं, चिकित्सक मानव-अंगों की चोरी करते हैं। अध्यापक छात्र-छात्राओं का यौन-शोषण करते हैं। प्रशासनिक अधिकारी रिश्तवखोर व व्यभिचारी हैं। व्यापारी रस में विष घोल रहे हैं। न्याय पैसों से बिक रहा है। धर्माचार्य कॉल गर्ल्स रैकिट चला रहे हैं। कहाँ तक कहें, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चरित्रहीनता छाई हुई है।

डॉ.शर्मा लिखते हैं कि ऐसे चारित्रिक संकट के समय में चरित्र-निर्माण के विषय में सोचना स्वाभाविक प्रक्रिया है। चिन्तन की यह स्वाभाविक प्रक्रिया उन्हें भारतीय सभ्यता, संस्कृति, धर्म, दर्शन, आध्यात्म, साहित्य और परम्परा की ओर खींच कर ले जाती है। वह भारतीयता के इस अगाध सागर में डूबते उतराते हैं और ऐसी 'मणियाँ' बटोर पाते हैं, कि स्वयं धन्य हो उठते हैं। वह लिखते हैं, 'यह हमारा सौभाग्य है कि हम उस देश में पैदा हुए हैं, जहाँ सभ्यता का सूर्य सबसे पहले उदय हुआ था। भारतीयों ने ही अपने अपने चरित्र से संसार के समस्त मानवों को शिक्षित किया था।...

'अपने जीवन के अनेक क्षेत्रों में भारतीयों ने अपने-अपने व्यवहार से ऐसे अनेक कीर्तिमान स्थापित किये हैं, जो संसार की भावी पीढ़ियों के लिये आदर्श बन गये हैं। ये आदर्श ही चरित्र-निर्माण की आधारभूत सामग्री का काम करते हैं।'

डॉ.चन्द्रपाल शर्मा ने अपने चिन्तन को यथावत अपने लेखों में उतार दिया है। इसीलिये विषय की व्यापकता में वह कहीं भटके नहीं और गहराई में डूबे नहीं। दिशाहीन चिन्तन की जगह सार्थक चिन्तन उनका ध्येय रहा। 'मानस में काम व क्रोध' लेख में वह बताते हैं कि 'काम' पर विजय के बाद आया अहंकार अपमानित करता है। 'गौतम तिय तरी' में वह स्पष्ट करते हैं कि यदि कोई घटना वास्तविक जीवन में भी घटी हो, कवियों के हाथ में पड़कर उनकी इच्छानुसार स्वरूप बदलती रहती है। तुलसी की तरह डॉ.शर्मा भी 'जसु-अपजसु बिधि हाथ' की मान्यता के साथ खड़े दिखायी देते हैं।

डॉ.शर्मा 'तुलसी विषयक जनश्रुतियाँ' लेख में अनेक सन्दर्भों से स्पष्ट करते हैं कि तुलसी अपने जीवन काल में अपने काव्य के कारण मूर्धन्य कवि स्वीकार्य हो गये थे। लेखक 'मानस में नैतिक मूल्य' भी देखता है और 'महाभारत के आदर्श' भी। उसकी दृष्टि 'युधिष्ठिर-श्रीकृष्ण की कूटनीत' पर भी पड़ती है। डॉ.शर्मा यह भी चिन्तन करते हैं कि 'वाल्मीकि के पात्र तुलसी के हाथ' पड़कर 'क्या' और 'क्यों' हो गये। 'गीता ही क्यों?' का समाधान करते हुए लेखक का चिन्तन दिशा देता है कि एकमात्र गीता ही ऐसा ग्रन्थ है, जिसे अपनाकर हम कृतकृत्य हो सकते हैं।

'मनु का नारी विषयक दृष्टिकोण' सम्प्रति विवादित रहा है। डॉ.शर्मा अपने अध्ययन, चिन्तन और मनन से इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मनु को स्त्री स्वतंत्रता का विरोधी बताने वाले अपने स्वार्थवश क्षेपक का सहारा लेकर भ्रम फैला रहे हैं। मनु नारी सम्मान के प्रबल पक्षधर हैं। 'भारतीय वर्ण-व्यवस्था' पर लेखक का निष्कर्ष है कि इसमें सैद्धान्तिक रूप से कोई दोष नहीं है।...हमें मानसिकता को बदलना है, व्यवस्था को नहीं। 'आस्था का प्रश्न' लेखक को अनुत्तरित बना दीखता है, संभवतः इसीलिये 'आस्था का संकट' बना हुआ है।

'पादृशी भावना यस्य', 'हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी', 'कब बदलेगा राजनेताओं का रुग्ण चिन्तन', 'कथनी करनी का व्यतिक्रम', 'भारतीय नारी', 'होली', 'कहीं फिर पछताना न पड़े', 'राजनेताओं का रुग्ण चिन्तन', 'सन्तोष धन', 'विवेकानन्द के व्यावहारिक उपदेश', 'दृष्टिकोण का भेद', जैसे लेखों में लेखक की दृष्टि और दृष्टिकोण आकर्षित करते हैं। लेख 'लोक साहित्य की गहराई' में गहराई कम है, तो 'आँखों की भाषा' अटपटी है। 'सुमन जी के साथ बीते क्षण' संस्मरण-लेख है। संग्रह में कुछ लेख ऐसे भी हैं, जो चिन्तन की विशेष दरकार नहीं रखते हैं, किन्तु लेखक ने उनमें चिन्तन के बिन्दु तलाश लिये हैं।

'चिन्तन की मणियाँ' संग्रह के लेखों की भाषा सहज-सरल है। इसमें बुनावट है, बनावट नहीं। लेखों का सृजन एक लम्बे अन्तराल के बीच हुआ है, इसलिये समसामयिकता की झलक पदे-पदे मिल जाती है। ये अधिकतर समाचार पत्रों में प्रकाशनार्थ लिखे गये हैं, अतः अखबारी-पाठकों की रुचि और समझ का दबाव भी दिखता है, किन्तु लेखक ने लेखों को अखबारी बनने से बचाया भी है और साहित्यिक-स्तर को बरकरार रखा है।

निश्चित ही 'चिन्तन की मणियाँ' लेख-संग्रह रुचिकर, पठनीय, मननीय और संग्रहणीय है। ग्रंथ का मुद्रण-प्रकाशन निर्दोष और आकर्षक है। मूल्य तर्कसंगत है। हिन्दी के गम्भीर पाठक इसका स्वागत करेंगे।

शुभाकांक्षा

'आर्य्य लोक वार्ता' का जनवरी अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। सर्वप्रथम सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य को 'हिन्दी साहित्य एवं पत्रकारिता भूषण' की मानद उपाधि के लिए बधाई। डॉ.आर्य इस सम्मान के अधिकारी हैं। पूजनीय को पूज्य मानना हमारी भारतीय परम्परा है। ऐसे सम्मान सम्मानित व्यक्ति को और अधिक अच्छा करने की प्रेरणा देते हैं। आयु में कुछ बड़ा होने के कारण मैं डॉ.आर्य को शुभाशीष देता हूँ कि वह इसी प्रकार अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते रहें। क्षितीश वेदालंकार का लेख तर्क सम्मत सामग्री प्रस्तुत करता है किन्तु जिनको नहीं समझना वह नहीं समझेंगे। 'काव्यायन' में फेसबुक से लेकर डॉ.कुमार विश्वास की कविता प्रकाशित कर सम्पादक जी ने अपनी विशाल हृदयता व देश के प्रति प्रबुद्ध नागरिक की जिम्मेदारी का परिचय दिया है। मैं अभी पिछले दिनों राजस्थान में श्रीनाथ द्वारा के साहित्य मण्डल के एक कार्यक्रम में गया था, वहाँ देशभर के १५०-२०० के बीच साहित्यकार उपस्थित थे। ये जानने पर कि मैं कुमार विश्वास का पिता हूँ, सब एक स्वर से कह रहे थे कि कुमार के साथ अन्याय हुआ है, 'आप' ने धनपतियों को सीट बेच दीं। मुझे लगता है, कुमार को एक बहुत बड़े वर्ग का आशीर्वाद मिल रहा है। पं.राम चन्द्र देहलवी की सामग्री से ज्ञानवर्धन होता है। सम्पादक ही से विनम्र अनुरोध है कि पृष्ठ-३ पर 'विस्मयकारी विवेकानन्द -श्री कृष्णचन्द्र गर्ग' शीर्षक से 'दयानन्द संदेश' दिल्ली से साभार जो सामग्री दी है उससे बचें क्योंकि शास्त्रार्थ का खामियाजा हम बहुत उठा चुके हैं। हमसे विरोध करने वाले इन्हीं बातों को केवल याद रखते हैं।

-डॉ.चन्द्रपाल शर्मा
सहयोग, सर्वोदय नगर, पिलखुआ-245304

***

आर्य लोक वार्ता का मुखपृष्ठ का लेख प्रत्येक अंक में विशिष्ट रहता है, इसके लिए आपका समसामयिक चयन प्रशंसनीय है। इस बार महाशिवरात्रि पर्व पर शिव जी के वास्तविक स्वरूप का जो दिग्दर्शन लेख में कराया गया है वह विद्वत्तापूर्ण और अद्भुत है। भारतीय जन भक्तिभाव में डूबे रहते हैं और देवता के काल्पनिक रूप स्वरूप को सत्य मानकर पूजते रहते हैं। लेख में शिव के राष्ट्रीय स्वरूप की कल्पना आँखें खोलने वाली है। ऐसे ही अन्य देवी देवताओं के राष्ट्रीय स्वरूप को व्याख्यायित करने की आवश्यकता है। आशा है अनुरोध पर आप ध्यान देंगे। 'वाचनालय से' में दी गयी जानकारी ज्ञान बढ़ाती है किन्तु विस्मयकारी विवेकानन्द द्वारा गोमांस भक्षण करने की शिक्षा देना सत्य नहीं लगती। वेद प्रताप वैदिक की मान्यता उचित है कि यदि भारत में जाति मिट जाए तो गरीबी समाप्त हो सकती है किन्तु यह इतने गहरे प्रविष्ट कर चुकी है कि कोई संत महात्मा राजनेता जाति मिटाने की सोच भी नहीं सकता। स्थायी स्तम्भों में लेखांश, विनय पीयूष सहिता काव्यायन में सभी रचनाकारों की कविताएँ स्तरीय एवं रोचक लगीं। आर्य पर्वों की तालिका बहुत अच्छी लगी। इससे पूरे वर्ष आर्य समाज की महत्त्वपूर्ण तिथियों की जानकारी मिलती है। पत्र की साज सज्जा और पृष्ठ बहुत आकर्षक हैं, नए रूप में पत्र का स्वागत करती हूँ।

-नमिता वैश्य
प्रा, पाठशाला, खालेगाँव, मसकनवां, गोण्डा

***

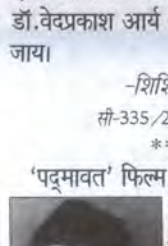

श्रद्धेय सम्पादक जी, नववर्ष २०१८ हेतु शुभकामनाओं के साथ आपको व आपकी लेखनी को शत शत नमन। आप के आर्य लोक वार्ता से हमें बहुत सी जानकारियाँ मिलती रहती हैं। पद्मिनी की वीरगाथा, जो हम भूल रहे थे याद आया 'जौहर-व्रत करने वाली करुणा की करुण पुकार कहाँ'। आपका सम्पादकीय समझने के लिए होता है, मनन योग्य होता है। डॉ.चन्द्रपाल शर्मा को भी नमन, जिन्होंने अपनी खोज व अध्ययन से श्री रामचन्द्र के मर्यादा व पुरुषोत्तम को मजबूती दी है नहीं तो हम कितने दुविधा में थे सुनी सुनाई बातों से। आज विद्वानों, प्रबुद्ध वर्ग, ऋषियों मुनयों को आगे आना चाहिए। सर्व साधारण को समझायें, अनगिनत लेख लिखते रहें- 'राम से गलत काम हो ही नहीं सकता'। गलत लोगों ने गलत उद्देश्य से किया। हिन्दू समाज में फैली भ्रान्तियों को दूर करें। गौतम बुद्ध, दयानन्द सरस्वती महर्षि आदि जीवन पर्यन्त अन्धविश्वास, पाखण्ड व कर्म काण्ड आदि के विरुद्ध आन्दोलन, संघर्ष करते रहे। आज हिन्दू समाज को एकजुट किया जाय, संगठित किया जाय न कि अलग अलग जातियों धर्मों में बांट कर। अर्थात् सभी लोग संगठित हों जिसे एक प्रगतिशील, विकासवादी नेतृत्व ही लोगों को लेकर ला सकता है। इससे सबका विकास व कल्याण होगा और देश एक ऊँचाई पर स्थान प्राप्त करेगा। निवेदन है कि डॉ.चन्द्रपाल शर्मा जैसे लोग और आगे आयें। डॉ.शर्मा के अथक शोध पर अनेकों विद्वानों, गौरीशंकर वैश्य, गुरुप्रसाद मिश्र, डॉ.उमाशंकर शुक्ल, पाल प्रवीण आदि ने सराहा है। सबलोग मिलकर ऐसा आयोजन करते रहें कि डॉ.शर्मा, डॉ.वेदप्रकाश आर्य आदि लागों को सुना जाय।

-शिशिर कुमार श्रीवास्तव
सी-335/2, इन्दिरा नगर, लखनऊ

***

'पद्मावत' फिल्म को लेकर लिखे गये 'सम्पादकीय' में आपकी सोच और चिन्तनधारा दूरदर्शी रही। बधाई। माननीय उच्चतम न्यायालय का फैसला अपने आप में पूर्णतया सही है। फिल्म सेंसर बोर्ड अथवा फिल्म प्रमाणन बोर्ड अपने आप में एक दायित्वपूर्ण विभाग है। गुरुवार १८ जनवरी का फैसला निःसन्देह तर्क संगत है। सी.डी.एफ.सी. की अपनी गरिमा है। याचिक को अगर इस मामले में कुछ कहना था तो पहले सी.वी.एफ.सी.में अपनी बात रखनी चाहिए, उसके बाद उच्चतम न्यायालय जाना चाहिए था। फिल्म 'पद्मावती' के विरोध में प्रदर्शन कारियों की हिंसात्मक गतिविधियों की जितनी निन्दा की जाय कम है। राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाना प्रदर्शनकारी का अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है। सारे देश में फिल्म का सफलता पूर्वक प्रदर्शन यह प्रमाणित करता है कि विरोध प्रदर्शन करने वालों की चिन्तन कितना संकीर्ण था।

-बाँके बिहारी 'हर्ष'
अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

***

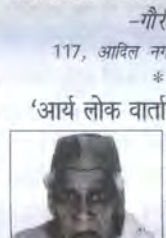

आर्य लोक वार्ता जनवरी अंक में ऋषिबोध पर्व पर श्री क्षितीश वेदालंकार महोदय का महादेव शिव विषयक आलेख नेत्रोन्मीलक है। विद्वान लेखक ने पौराणिक शिव के स्वरूप की शास्त्र सम्मत विवेचना की है जो सर्वथा शाश्वत सटीक और विज्ञान से परिपूर्ण है। 'प'वर्ग रचित मूर्ति से शिव के सत्य स्वरूप के दर्शन होते हैं। भक्तों को इसी 'राष्ट्रीय चेतना' का आराधन करना चाहिए। स्वामी दयानन्द की (मूलशंकर) बाल अवस्था की अवधारणा के रहस्योद्घाटन को सच्चे आर्य को शिरोधार्य करना चाहिए तभी बाह्याडम्बरों से मुक्ति मिल सकती है। भंसाली की तीन भूलों के माध्यम से सम्पादकीय चिन्तन के आधुनिक युग बोध की रक्षा की गयी है जो स्वागत योग्य है। कपड़ा कोठी का योगी श्री निर्मल कुमार जैन का व्यक्तित्व प्रेरणीय है, उनके सवा सौ वर्ष स्वस्थ सुदीर्घ जीवन की मंगलकामना है। मनुष्य कब बनता है? (वेद प्रवचन में) लेख विद्वता पूर्ण तथा मननीय है। काव्यायन में सुप्रसिद्ध गीतकार कुमार विश्वास की कविता वीरोचित ओज के साथ स्वाभिमान जाग्रत करती है। इसके अतिरिक्त दयानन्द जड़िया 'अबोध', डॉ.कैलाश निमग, डॉ. उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ' तथा कालजयी कवि गया प्रसाद शुक्ल सनेही की रचनाएँ मंत्रमुग्ध करती हैं। एतदर्थ साधुवाद। पत्र की रंगीन स्निग्ध एवं चित्ताकर्षक पृष्ठों ने भव्यवता में अभिवृद्धि की है। आपकी लोकरंजक आयोजना को बधाई।

व्रत शिवरात्रि दिवस आता, ऋषि आत्मबोध पर्व।
खोजा 'मूल' मूलशंकर ने, करें आर्यजन गर्व।
दे 'सत्यार्थ प्रकाश' जगत को, तोड़े भ्रम-छल फंद।
बाँटा स्वामी दयानन्द ने, सत्य ज्ञान सानन्द।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' का जनवरी २०१८ अंक प्राप्त हुआ। सम्पादकीय पढ़कर मन आह्लादित हो गया। भंसाली की तीन भूलें शीर्षक में सम्पादक जी ने फिल्म जगत का अच्छा मन्थन कर डाला है जिसमें पुराने फिल्म निर्देशकों यथा व्ही.शान्ताराम, सोहराब मोदी, रामानन्द सागर, बी.आर.चोपड़ा, राजकपूर आदि लगभग एक दर्जन नामों का उल्लेख किया है। साथ ही 'सती प्रथा' और 'जौहर' दोनों का ही अन्तर स्पष्ट किया गया है। राजस्थान की झाँकी प्रस्तुत करती हुई कवि प्रदीप की पंक्तिया भी उद्धृत की हैं-'ये है अपना राजपूताना नाज जिसे तलवारों पे'। साथ ही श्यामनारायण पाण्डेय की 'जौहर' महाकाव्य की पंक्तियों से समापन बहुत ही अच्छा लगा। 'काव्यायन' में कालजयी रचना जो यशःशेष कवि गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' जी द्वारा सृजित है 'नेताजी सुभाष चन्द्र बोस' यह देवनागरी में लिपिबद्ध उर्दू कविता है। अन्य लेख व रचनाओं के साथ साथ समाचार भी ज्ञान प्रदायक हैं। सुन्दर अंक हेतु सम्पादक जी को साधुवाद।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'
370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

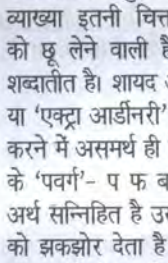

जनवरी २०१८ का अंक देखा। मुख पृष्ठ पर स्वामी दयानन्द सरस्वती का चित्र और उनके सम्बन्ध में प्रकाशित लेख देखकर चित्त प्रसन्न हो गया। 'आर्य लोक वार्ता' को मेरी बधाई और शुभकामना। रोगग्रस्त पराधीन भारत के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती एक कुशल चिकित्सक बनकर आये थे। वे इतने महान् और क्षमाशील थे कि जिस जगन्नाथ रसोइए ने उन्हें विष दिया था उन्होंने उसको भी क्षमा कर दिया था और कुछ धन देकर दूर चले जाने का आदेश दिया था। उन्होंने प्राण त्यागते समय अपने भक्तों से कहा था मेरा जो काम अधूरा रह गया है, उसे तुम्हें पूरा करना है। स्वामी जी ने कहा था-'मैं संसार को कैद कराने नहीं मुक्त करवाने के लिए आया हूँ।' उनके द्वारा १० अप्रैल १८७५ को स्थापित 'आर्य समाज' का यही संदेश है कि जीवन में सत्य असत्य को समझो और उन्नति का मार्ग पकड़ो तथा उस पर चलो।

-महाशय आनन्द भण्डारी
सुभाष नगर, आलम बाग, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' का जनवरी अंक देखा- मुख पृष्ठ पर प्रकाशित श्री क्षितीश वेदालंकार का लेख 'शिवरात्रि- आत्म चेतना का प्रथम विस्फोट' पढ़ कर मन प्रसन्नता से झूम गया। लेख का एक एक शब्द और एक एक पंक्ति चित्त को पुलकित करती रही। ऐसा भावपूर्ण और उद्बुद्ध करने वाला लेख इससे पहले मैंने नहीं पढ़ा था। राष्ट्र के रूप में शिव का जो रूपक कवियों द्वारा प्रस्तुत किया गया था- उसकी व्याख्या इतनी चित्ताकर्षक और हृदय को छू लेने वाली है। लेख की प्रशंसा शब्दातीत है। शायद अंग्रेजी के 'एक्सलेंट' या 'एक्ट्रा आर्डीनरी' मेरे भावों को व्यक्त करने में असमर्थ ही सिद्ध होंगे। वर्णमाला के 'पवर्ग'- प फ ब भ म- में जो गूढ़ अर्थ सन्निहित है उसका उद्घाटन हृदय को झकझोर देता है और हमारे प्राचीन महापुरुषों की गूढ़ दिव्य दृष्टि का परिचय दे देता है। 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ. वेद प्रकाश आर्य मेरे सहपाठी हैं और हमलोगों ने विज्ञान वर्ग में हाईस्कूल परीक्षा राजा कालेज सीतापुर से साथ ही उत्तीर्ण की है। उनकी सम्पादन कला बेजोड़ है और हिन्दी भाषा में उनकी पकड़ अद्भुत है। 'आर्य लोक वार्ता' के पूर्व अंकों में 'वाल्मीकि रामायण में उत्तर काण्ड प्रक्षिप्त है'- लेख में डॉ.चन्द्रपाल शर्मा ने अपनी शोध और लेखन की प्रतिभा का जो परिचय दिया है- उसने मेरे हृदय पर अमिट छाप अंकित की है।

-गुरु प्रसाद मिश्र 'गांधी'
आर्य नगर, सीतापुर

***

परम आदरणीय पाल प्रवीण जी की अनुकम्पा से 'आर्य्य लोक वार्ता' के सभी अंकों को पढ़ने का लाभ मिलता है इसके लिए मैं उनका आभार प्रकट करता हूँ। वैसे तो पत्रिका के सभी अंक सराहनीय पाठ्य सामग्री से भरपूर रहते है और प्रस्तुत जनवरी अंक भी 'गागर में सागर' के अनुरूप इतिहास, सभ्यता, संस्कृति आदि संबन्धी अमूल्य विचारों से भरा है, पुनश्च सम्पादकीय तो अद्भुत बन पड़ा है- इतिहास, तर्क तथा पठनीयता अत्यंत उच्चकोटि की है। ऐसे समर्थ प्रधान सम्पादक जी को भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद उ.प्र. ने 'हिन्दी साहित्य एवं पत्रकारिता भूषण' की मानद उपाधि से सम्मानित करके अत्यंत सराहनीय कार्य किया है। इस संस्था को इसके लिए साधुवाद। वैसे तो सभी स्थायी स्तम्भों के अंतर्गत लेखकों/संपादक ने अच्छी सामग्री प्रस्तुत की है, फिर भी निम्नलिखित से मैं बहुत प्रभावित हुआ-

'मूलशंकर की आत्मचेतना का प्रथम विस्फोट; 'वेद प्रवचन'-मनुष्य कब बनता है? 'दयानन्द चरितम्', 'वाचनालय से' तथा 'कपड़ा कोठी' के श्री निर्मल कुमार जैन के परिचय से। 'शुभाकांक्षा' के अन्तर्गत डॉ.निष्ठा विद्यालंकार का अति पांडित्यपूर्ण विवेचन सराहनीय है। 'ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई?' अति ज्ञानवर्द्धक है। सभी लेखकों, कवियों एवं सम्पादक मण्डल को सादर नमन।

-द्वारिका प्रसाद
सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

'आर्य्य लोक वार्ता' के जनवरी अंक के प्रथम पृष्ठ पर श्री क्षितीश वेदालंकार जी का लेख 'मूल शंकर की आत्म चेतना का प्रथम विस्फोट' पढ़कर नवीन ज्ञान प्राप्त हुआ। सम्पादकीय सदैव की भांति अनुपम है। 'कपड़ा कोठी' के श्री निर्मल कुमार जैन का परिचय पढ़कर हर्ष की अनुभूति हुई। 'वाचनालय से' के अन्तर्गत आचार्य सोमदेव जी के विचार दयानन्द की प्रतिमा पर पढ़कर हम सभी प्रभावित हुए। 'शुभाकांक्षा' में डॉ.निष्ठा विद्यालंकार जी ने अच्छी जानकारी प्रस्तुत की है। उनका यह मानना कि जब हमारा ज्ञान शुद्ध होगा तो हमें विशुद्ध परामात्मा की प्राप्ति होगी सभी पाठकों को प्रेरणा देने वाला है। 'काव्यायन' की सभी कविताएँ रुचिकर लगीं विशेष रूप से श्री गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' की सुभाष चन्द्र बोस, डॉ.कुमार विश्वास की रचना- जो शिलालेख बनता उसको, वरिष्ठ कवयित्री रामा आर्य 'रमा' का ऋतु वर्णन।

प्रधान सम्पादक महोदय को हिन्दी साहित्य एवं पत्रकारिता भूषण की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया, पढ़कर प्रसन्नता हुई। हमारी बधाई। पर्यावरण शुद्धि यज्ञ, प्रदूषण मुक्त, नशामुक्त समाज बनाने के प्रयास होते रहते हैं, सभी सम्बन्धित संस्थाओं व कार्यकर्ताओं का साधुवाद। मैं इस जनवरी अंक की साज सज्जा और अंतिम पृष्ठ की सामग्री से अत्यधिक प्रभावित हूँ और इसकी निरन्तर प्रगति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ।

-श्रीमती कमलेश पाल
योगाश्रम, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

धारावाहिक-(81)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

(गतांक से आगे)

(क) मुख-दोष- मुख-दोष मनुष्य का एक मुख्य दोष है। साँपों के मुख में यदि विष न होता तो संभवतः लोग उन्हें प्रेम से पालते या कंठहार बना लेते। बहुत-से मनुष्यों के सम्बन्ध में भी यह कहा जा सकता है कि यदि उनमें मुख-दोष न हो तो वे सर्वप्रिय हो सकते हैं।

मुख-दोष के अनेक भेद हैं। उनमें से दो-एक के विषय में ही यहाँ पर कुछ लिखना संभव होगा। सर्वप्रथम वाचालता को ही लीजिये। बहुत से लोग अपने वाचालता का कटु फल भोगते हैं। बहुत बोलने से मनुष्य का बड़प्पन नहीं साबित होता। अँगरेजी में कहावत है-'The horse-shoe that clatters has lost a nail.' अर्थात्-घोड़े को जो नाल खड़खड़ाती है उसकी कोई न कोई कील जरूर निकली रहती है। बहुत बड़बड़ाने वाले आदमी के दिमाग की भी कोई न कोई कील अपने स्थान से हटी हुई मिलती है। जो बहुत बोलते हैं, प्रायः वे बहुत काम के नहीं साबित होते। ऐसा व्यक्ति किसी को प्रिय नहीं लगता क्योंकि एक तो वह केवल बातें ही बनाता है, दूसरे बेकार के लिये दूसरों की खोपड़ी खाता या चाटता है। अपनी खोपड़ी खिलाना या चटवाना किसे अच्छा लगेगा? बातूनी का कोई विश्वास नहीं करता क्योंकि उसके पेट में कोई बात पचती ही नहीं। बिना बोले उसकी साँस फूलती है। दमा वाले के दम का कौन भरोसा करेगा! मनुष्य अपनी वाचालता से अपने व्यक्तित्व को बहुत हल्का बना देता है।

दुर्मुखता एक और भी बड़ा दुर्गुण है। कटुभाषिता, कुतर्क, परनिन्दा, प्रतिकूल वादिता, मिथ्यादोषारोपण, तुच्छ बातों को लेकर उछल-कूद मचाना, बात-बात में धमकी देना, कलह करना, धृष्टतापूर्वक झूठ बोलना, अनुचित कटाक्ष और सभ्य पुरुषों का अपमान करना आदि इसके अन्तर्गत आ सकते हैं। इन सबसे मनुष्य की दुर्जनता प्रकट होती है। दुर्वचन या शब्दविस्फोट किसी को प्रिय नहीं लगते। मिथ्या लांछन और निन्दा से बोलने वाले के भीतर की गन्दगी का ही पता चलता है। कबीर ने ठीक ही कहा है-'यक निन्दक के सीस पर कोटि पाप का भार।' निन्दक स्वयं महापापी-जैसा लगता है क्योंकि वह दूसरों के पापों का गट्ठर अपने सिर पर लिये घूमता है। उसके द्वारा समाज में दुर्भावना का प्रचार होता है, इसलिए लोक उसका आदर नहीं करता। इसी भांति जो लोग छोटी छोटी बातों को लेकर उछलकूद मचाते हैं, वे सबके आगे अपने ओछेपन का विज्ञापन स्वयं कर देते हैं। दूसरों का अहित वे कर पाएँ या नहीं, किन्तु अपनी हानि तो कर ही लेते हैं। दूसरों की पोल खोलने वाले अपनी भी पोल खोल देते हैं। दूसरों की शिकायत करने से दुनिया में अपनी भी शिकायत होती है। किसी के कर्कश वचनों से सुनने वालों को तो कष्ट होता ही है, उनसे वक्ता की कुटिलता और हृदयहीनता भी व्यक्त होती है। अपनी दुर्मुखता से मनुष्य अपने लिए चारों ओर एक प्रतिकूल वातावरण बना लेता है। उस वातावरण में पारस्परिक सद्व्यवहार नष्ट हो जाता है। तीक्ष्णवादी की कठोर और अनुचित बातों के कारण उसके निकटतम सम्बन्धी और स्नेही भी उससे दूर रहना चाहते हैं। और प्रायः यह भी होता है कि 'जीभ तो कहि भीतर गई, जूता खात कपाल।'

इन उदाहरणों से मुख-दोष का महत्व समझा जा सकता है। स्थानाभाव से इस सम्बन्ध में अधिक नहीं लिखा जा सकता है। कुछ दोषों का उल्लेख कर देना ही पर्याप्त होगा:-(१) वचन-दरिद्रता--समय पर उचित बात बोलने में चूक जाना, सोचते ही रहना, अनावश्यक मौन। (२) शुष्क और सारहीन वचन बोलना। (३) असामयिक प्रलाप। (४) मिथ्या आश्वासन देना-वादा करके उसे पूरा न करना, बदल जाना, भूल जाना, अब-तब में दूसरों को लटका रखना। (५) चाटु- कारिता--मिथ्या स्तुति, हाँ में हाँ मिलाना। (६) किसी विषय को अतिरंजित करना-- तिल का ताड़ बनाना। (७) गोलमोल या पेचदार बात बोलना। (८) बात-बात में सिद्धान्त घुसेड़ना। (९) हठ-दुराग्रह-पक्ष पात करना। (१०) अनुचित आलोचना करना। (११) कहीं की ईंट और कहीं का रोड़ा जोड़ना। (१२) छोटे मुँह बड़ी बात कहना। (१३) दूसरों की गुप्त बात पूछना। (१४) जो कुछ जहाँ भी सुना उसे अकारण चारों ओर गाते फिरना। (१५) दो तरह की बातें करना। (१६) मुंह-तोड़ उत्तर देना। (१७) नीचों के साथ तू-तू, मैं-मैं करना। (१८) उचक-उचककर ठहाका मारते हुए दूसरों की आत्म-कथा या पुरखा-पुराण सुनाना। (१९) भले आदमियों की बात काटना। (२०) खीझना, पछताना, अपना ही रोना रोना। (२१) भद्दा हास परिहास। (२२) बात बात में हँसकर अपने मस्तिष्क का खोखलापन प्रकट करना। (२३) मुँह खोले रहना। (२४)दाँत पीसना। (२५) नाक-भौं सिकोड़ना, आँख दिखाना, लाल-पीला होना और बात बात में मुँह लटकाना तथा गाल फुलाना, आदि।

मनुष्य के व्यक्तित्व और व्यावहारिक जीवन पर इस प्रकार के दोषों का बुरा प्रभाव पड़ता है। इनसे बचना चाहिये।

(ख) अनुचित साहस- अब अनुचित साहस के कुछ उदाहरण लीजिये-

(१) 'बरसत बारिद-बुन्द गहि चाहत चढ़न अकास'--तुलसी। इसका भाव स्पष्ट है।

(२) 'पाथर डारै कीच में उछरि बिगारै अंग'--वृन्द। दुर्जनों को छेड़ना या हठी मूर्खों से भिड़ना अनुचित साहस ही है। उनके साथ उलझने से अपनी मान हानि होती है।

(३) 'पाहन में क्या मारिये चोखा तीर नसाय'--कबीर। किसी कठोर हृदय को रिझाने की चेष्टा करना, जहाँ प्रेम का सत्कार न हो वहाँ प्रेम प्रदर्शित करना या किसी से जबरदस्ती करना, मूढ़ों के आगे विद्वत्ता दिखाना आदि वैसा ही है जैसे पत्थर में तीर मारना। जहाँ सफलता की कोई आशा न हो, वहाँ व्यर्थ का श्रम करना और अपना बल दिखाना अनुचित साहस ही है।

(४) 'जहाँ बन्दूक चलती है, वहाँ जादू नहीं चलता'--अकबर। रणभूमि में जहाँ बन्दूकें चल रही हों, वहाँ जादू के जोर से शत्रु को जीतने की चेष्टा करना अनुचित साहस ही माना जायगा। इसी प्रकार 'नख छेदन के लाब कुठार'--अर्थात् नाखून काटने के लिये कुल्हाड़ा लेकर दौड़ना अनुचित साहस है। उचित साधनों की उपेक्षा करके अनुपयुक्त साधनों से किसी कार्य को सिद्ध करने का दुष्प्रयत्न करना अनुचित साहस है।

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार क्रमशः)

व्याख्यान माला (3)

ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई?

-शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी-

Hegal Philosopher (हीगल फिलासाफर) ने कहा था कि 'What so ever is, is according to reason and whatever is according to reason that is?' जो अकल के मुताबिक है वह है और जो है वह अक्ल के मुताबिक है। पहिले 'है' को देख लीजिए अक्ल के मुताबिक है कि नहीं? क्या जीवात्मा जगत् में मौजूद है, शरीर उनके दिये हुए हैं और वह जीवात्मा कुछ न कुछ रात दिन हासिल करता है। कोई धन हासिल करता है, कोई शोहरत हासिल करता है, कोई इल्म हासिल कर रहा है। हासिल कर रहा है, रात दिन हासिल कर रहा है। और हासिल करने में लगा हुआ है। क्योंकि उसके पास कमी है। एक ओर तो सारे जीवात्माओं को रख लीजिए दूसरी ओर प्रकृति है। प्रकृति उन जीवात्माओं का साधन है, Instrument है, इनका वह औजार है। उन औजारों से जीवात्मा आगे काम करता है। एक शक्स बाइसिकल पर चला जा रहा है, बाइसिकल उसका औजार है। किससे बना है? प्रकृति से, Matter से। तो इस वास्ते कहते हैं कि तीन चीजें हैं माद्दा (प्रकृति), जीवात्मा और परमात्मा। परमात्मा ने जीवात्मा के लिए जगत बनाया या उत्पन्न किया और कहा कि तुम इस साधन से तरक्की करो जहां तक तुममें योग्यता है। मैं तुम्हारा सहारा बनूंगा और बना हुआ हूं। अनादि काल से अनन्त काल तक बराबर मैं तुम्हारा सहारा रहूंगा और उस सहारे से तरक्की करते चले जाओ। तो क्या बात है?

यह दुनिया जो है वह तीन चीजों से बनी हुई है और ये तीन चीजें वही हैं जैसा हीगल फिलॉस्फर ने कहा-'What so ever is, is according to reason and what is according to reason that is.' वह क्या है? दुनियां में शुरू से ही अर्थात् शुरू कब से जब से दुनियां बनी है- क्या कोई वक्त ऐसा भी था जब दुनियां नहीं थी- नहीं यह मतलब नहीं है। कहने का मतलब यह है कि जबसे यह दुनियां का सिलसिला चला आ रहा है, आप देखेंगे कि ये तीन ही चीजें हैं-ईश्वर, जीव और प्रकृति। और इन तीन चीजों को ही आप बराबर देखते चले जाइये। आप बाजार में चले जाइये, तो वहां क्या मिलेगा? दूकानदार, खरीददार और चीज। लेकिन अगर वहां तीन ऐसी दुकानें खुली हों, कि दरवाजे तो खुले हों लेकिन उनमें से एक में चीज भी हों और दूकानदार भी हो लेकिन खरीददार न हो तो दूकानदार चीज किसे बेचेगा? ऐसी अवस्था में दुकानदार कहा करते हैं- 'जी मंदा हो रहा है।' दूसरी दूकान में चीज भी है खरीददार भी है लेकिन दूकानदार नहीं तो बेचेगा कौन? तीसरी में दूकानदार भी है, खरीददार भी है, चीज नहीं है तो दूकानदार देगा क्या? यह दूकानें खुली हुई भी बन्द के समान हैं क्योंकि एक में चीजें बेचनेवाला नहीं, दूसरी में चीजें खरीदने वाला नहीं और तीसरी में चीजें नहीं हैं। इसलिए कहते हैं तीन में से किसी एक को निकाल दीजिए, बाजार बन्द शुमार किया जाएगा। तो वह तीन बराबर चले आ रहे हैं उसी तरह पर। हमारे ऋषि मुनियों ने हमारे जीवन में इन तीन चीजों को रखकर यह यकीन दिलाया है कि कहीं भूल मत जाना इस दुनियां की पूर्णता तीन पर है। परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति पर पूर्णता है। वहां जहां बाजार में नीलाम हो रहा है, चले जाइये। एक मुसलमान साहब, जो हमारे मजहब के नहीं हैं, चीजें नीलाम कर रहे हैं, क्या नीलाम हो रहा है? पुरानी चीजें रखी हैं। किसी ने कह दिया दो रुपये अब आवाज लगा रहा है वह 'दो रुपया एक दो रुपया दो' बोल रहे हैं बार-बार। कोई आगे नहीं बढ़ता। फिर किसी ने कह दिया 'तीन रुपये' तो मियां जी ने तीन रुपया एक तीन रुपया दो की आवाज लगानी शुरू कर दी। बहुत देर हो गई तो उसने कहा, 'साहिब अब जाती है तीन रुपये में'। और कह दिया 'तीन रुपया तीन' और चीज तीन रुपये में बिकी मान ली गई। 'तीन रुपया तीन' कहते ही खरीदने वाला तीन रुपये देकर और चीज लेकर चला गया। कोई पूछता है उस नीलामकर्ता से कि 'तीन पर क्या बवाल है? यह क्या वजह है कि यह 'तीन' कहकर ही आप अपनी बोली समाप्त कर देते हैं, ये तीन पर ही खतम क्यों करते हैं। ये चार, पांच, छः क्यों नहीं बोलते हैं?' तो मियां जी कहने लगे 'मैं क्या जवाब दूँ साहब इसका! यह तो पुराने जमाने से चली आ रही है किन्हीं बड़ों से पूछिए। जब रास्ते में आ रहे थे तो क्या देखते हैं कि मास्टर साहब लड़कों को दौड़ा रहे हैं और कह रहे हैं देखो जब वन, टू और थ्री कहूँ तो थ्री पर भागना। 'अरे आप मैथमेटिक्स (गणित) के अध्यापक हैं थ्री, फोर, फाइव, सिक्स, सेवन क्यों नहीं बोलते?' किसी ने कहा। उन्होंने कहा, 'अरे! ऐसे बोलेंगे तो काम नहीं होगा, लड़के कैसे दौड़ेंगे?' देखिए 'वन, टू, थ्री' कह कर लड़कों को दौड़ाया जा रहा है। और जो पास होकर आते हैं वे फर्स्ट डिवीजन, सेकिन्ड डिवीजन और थर्ड डिवीजन में आते है फोर्थ डिवीजन नहीं है। रेल में बैठते हैं तो वहां भी फर्स्ट क्लास, सेकिन्ड क्लास और थर्ड क्लास है। घर में जाइए तो देखते हैं कि स्त्री है, पति है और बच्चे हैं। तीन चीज वहां भी हैं। यहां देखिए तो मैं (व्याख्याता), व्याख्यान और आप (श्रोता)। इन तीनों में से कोई एक चीज निकाल दीजिए- मैं व्याख्यान देना बन्द कर दूँ, चुपचाप बैठ जाऊं तो लोग कहेंगे कि 'इसे ऊपर क्यों बिठा रखा है, और नीचे क्यों बैठे हैं सब खामोश हैं आखिर बात क्या है?' आप चले जाइये मैं व्याख्यान देने लगूं तो लोग कहेंगे कि यह बेवकूफ है या पागल है? जो बहक रहा है।

जरा विचारिए। कोई एक चीज आप इन तीन में से निकाल दीजिए- व्याख्याता, श्रोता और व्याख्या। यह तीन चीजों का नमूना किसी न किसी रूप में बराबर चला आ रहा है। कहने का मतलब यह है कि दुनियां ऐसे माकूल अजजा से बनी हुई है जिसका कोई खण्डन आज तक नहीं कर सका। जिस किसी ने भी इस सम्बन्ध में कोई शंका की मैंने यही उत्तर दिया कि तीन के बगैर कोई भी चीज पूरी होती ही नहीं। मुसलमानों से पूछा कि खुदा दुनियां किसके लिये बनाता है? कोई होना चाहिए जिसके लिए खुदा ने यह दुनिया बनाई। ईसाइयों से भी यह बात पूछी। किन्तु वे भी कोई सन्तोष जनक उत्तर न दे सके।

मेरे यहां तो इस प्रश्न का सीधा सा उत्तर है कि जीवात्मा हमेशा से परमात्मा के साथ है और ईश्वर, अनादिकाल से जबसे जीवात्मा उसके साथ है जानता है कि जीवात्मा महद्दुल्अक्ल है। छोटे से छोटे जानवर के शरीर में भी जीवात्मा है। जीवात्मा अत्यन्त सूक्ष्म है। जैसे गीता में कहा है :

नैनं छिन्दन्तिशस्त्राणि, नैनं दहति पावकः
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः।

जीवात्मा इतना सूक्ष्म है कि 'बालदग्र-शतभागस्य शतधाकल्पितस्य च' बाल के अग्र भाग के दस हजारवें हिस्से के समान। शास्त्र ने जीवात्मा को इतना सूक्ष्म बताया है। इस कहने का तात्पर्य यह है कि जो जीवात्मा इतना छोटा है वह सर्वज्ञ कैसे हो सकता है? यह all Knowledge तो नहीं हो सकता। परमात्मा जानता है कि जीवात्मा असंख्य है और मेरे अधीन है तो मेरी जिम्मेदारी है कि मैं उन्हें ज्ञान दूँ, क्योंकि मैं all Knowledge हूँ, मैं सर्वज्ञ हूँ, सबकुछ जानता हूँ। कितना अच्छा हो यदि मेरे ज्ञान का लाभ मैं भी उठाऊँ और ये जीवात्मा भी उठाएं। यदि कोई व्यक्ति अपने ज्ञान से दूसरों को लाभ न पहुंचाए तो लोग उसे स्वार्थी कहते हैं। और कोई व्यक्ति अपने ज्ञान से अन्यों को भी लाभान्वित करे तो उसे लोग परोपकारी कहते हैं। तो परमेश्वर भी परोपकारी है। जीवात्मा के भले के लिए, जबसे वह है बराबर अपना ज्ञान देता चला आ रहा है। एक लम्हा के लिए भी उसने अपना काम बन्द नहीं किया है। जीवात्मा का वजूद, उसके अन्दर जो योग्यता उन्नति करने की है उसके विकसित होने से है। यह उन्नति ईश्वर के सम्पर्क से हो रही है। जैसे बच्चे के अन्दर जो काबलियत व योग्यता इल्म के हासिल करने की है वह उस्ताद की कुरबत से, अध्यापक के सान्निध्य से बढ़ती जा रही है। वह इल्म में रात दिन ऊंचा होता चला जा रहा है। इसी प्रकार जीवात्मा ईश्वर के सान्निध्य से, जो उसका उस्ताद है, ऊंचा होता जाता है। उसका ज्ञान उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। ईश्वर अपने ज्ञान को इस प्रकार सफल कर रहा है। प्रकृति, प्रकृति यह कहती है- वास्तव में कहती तो नहीं है- किन्तु जबाने हाल से कहती है कौल से नहीं कि मैं भी सफल हो रही हूं क्योंकि परमात्मा अपनी कारीगरी में मेरी क्षमता को जाहिर करके बता रहा है कि प्रकृति से क्या क्या लाभ उठाए जा सकते हैं। तो परमात्मा की कारीगरी प्रकृति को जाहिर कर रहा है और परमात्मा का इल्म जीवात्मा के गुण को जाहिर कर रहा है। जीवात्मा उस ज्ञान से अपना विकास कर रहा है। भगवान् ने जगत् क्यों बनाया? ऊपर के वर्णन से स्पष्ट हो गया कि भगवान जीवात्मा और प्रकृति का अस्तित्व सफल हो जाए इसलिए परमात्मा ने दुनियां बनाई।

(क्रमशः)

काव्यायन

ऋषि दयानन्द–जयंती

ऋषि दयानन्द को नमन!

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

दयानन्द जी को नमन, मनसा कोटि प्रणाम।
स्वप्न अधूरे पूर्ण हों, दो विवेक अभिराम।।

दयानन्द जी ने रचा, कृति 'सत्यार्थ प्रकाश'।
जग को आलोकित किया, देकर दिव्य प्रकाश।।

जड़ की पूजा क्या करें, जो है प्रस्तर मूर्ति।
क्या प्रसन्न या क्रुद्ध वह, क्या कर सकती पूर्ति।।

कण-कण में जो रम रहा, क्या उसकी हो खोज।
मूर्ति न लेती रंच भर, नित्य कराओ भोग।।

अन्धी श्रद्धा भक्ति ने, बढ़ा दिया पाखण्ड।
मानव सच से दूर हो, भोग रहा है दण्ड।।

वेद आदि सद्ग्रन्थ हैं, सत्य ज्ञान-आगार।
मन शरीर मस्तिष्क को, देते शुचि संस्कार।।

कभी न ऋषिवर ने किया, कथ्य-कर्म में भेद।
जीवन के स्तम्भ दृढ़, मानें चारो वेद।।

फहराया है विश्व में, ओम सुपावन केतु।
नर-नारायण मध्य में, बाँधा तात्विक सेतु।।

दयानन्द जी के वचन, रखें चित्त में आर्य।
त्याग दम्भ-पाखण्ड को, करें वेद-मत कार्य।।

–'117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

समर्थ गुरु रामदास–जयंती

समर्थ गुरु रामदास

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

ईश-भक्त, देश-भक्त, थे 'समर्थ रामदास'।
आध्यात्म की पवित्र, गंग में नहाते थे।
कर्म-जन्म-सुस्थली बनी महाराष्ट्र-मध्य,
जन मन मध्य संस्कार उपजाते थे।
वैराग्य-भाव निज जीवन में धार कर,
धर्म कर्म स्वाभिमान-मार्ग दिखलाते थे।
परतंत्रता की बेड़ियों के कटें बन्ध सभी,
क्रान्ति-ज्वाल इसी हित देश में जगाते थे।।

'समर्थ रामदास' बने 'शिवाजी' के गुरु,
जिनके कि जीवन में देश-प्रेम छाया था।
वीरता बिलोक कर, जिनकी औरंगजेब,
को छठी दूध कैसा होता याद आया था।
अफजलखाँ को था पठाया यमलोक और,
खान शाइस्ता को भी सबक सिखाया था।
आज भी समर्थ गुरु रामदास आते याद,
जिन्होंने राष्ट्र-धर्म, कर्म सिखलाया था।

–'चन्द्रा मण्डप', 370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

ऋतु वर्णन

फाल्गुन

❑रामा आर्य 'रमा'

फागुन आया झूम कर, ले खंझरी खइताल।
फागुन के रंग हैं रँगे- युवा, वृद्ध, सब बाल।।

पछुवाई भुंइ लोट है, पुरवा धरे न धीर।
तरकश पर देखो चढ़ा, कामदेव का तीर।।

कचरी, पापड़, गोझिया, भिन्न-भिन्न पकवान।
बनने लगे हैं अब 'रमा', घर-घर में मिष्ठान।।

रंग गुलाल अबीर के, 'रमा' बरसते मेह।
द्वेष भाव से दूर हो, मन में नेह सनेह।।

जन-जन मन में है 'रमा', हर्ष और आह्लाद।
हो अधर्म का नाश औ, बचे धर्म-प्रह्लाद।।

('रमा सतसई' से)

–417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

आभूषण हैं वृक्ष

❑डॉ. कैलाश निगम

भूमि के भूषण
प्रदूषण मिटाते तरु
छायी हुई धरा पे
इन्हीं से खुशहाली है।
रोक लेते मेघों को
कराते जल-वृष्टि और
जड़ों से मृदा की भी
कराते रखवाली है।
जीवन की भोर से
सहारा शाम तक दे के
पादपों ने विश्व की
समेट सुषमा ली है।
धारण सुरक्षाव्रत
कीजिये अभी से, यदि
तरु हैं हरे तो
हर ओर हरियाली है।।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

आई होली!

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

ले के फागुन की बहारें लो! फिर आई होली,
भर लो ऐ दोस्तो! उल्फत के रँगों से झोली।

कोई चाचर है सुनाता कोई गाता है गज़ल,
फिर रही प्यार के प्यासों की अनोखी टोली।

ढल गये इन्द्रधनुष के यहाँ साँचे में लोग,
प्यार के रंगों में भीगे सभी दामन-चोली।

खुद को रँगवाने सभी दौड़ पड़े उसकी तरफ,
प्यार से उसने जो रंगो की पिटारी खोली।

सुनके धुन मुरली की बेसुध हुई राधा ऐसी,
चूक से अपनी ही खुद अपनी भिगोली चोली।

मुसकराती है तो मोनालिसा लगती है कोई,
और मिस्री से भी मीठी है किसी की बोली।

ढूढ़ते रह गये हुलियारे उन्हें अपने बीच,
जाने कब कृष्ण के सँग चुपके से राधा हो ली।

याद आने लगी मुझको भी अचानक 'नासिर',
एक राधा ने कभी खेली थी मुझसे होली।

–जी–02, लोरपुर रेज़ीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

हर्ष–चतुष्पदी

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

के. वाई. सी. की तर्ज पर और भी तर्ज है,
सबकी अपनी अपनी मर्ज है, गर्ज है।
के. वाई. जी. यानी अपने ईश को जानो,
के. वाई. एस. यानी खुद को पहचानो।

सुबह जब नीचे से ऊपर कमरे में आया,
वायर गरम और हीटर जलता हुआ पाया।
कुछ पता नहीं चला कौन था इक्सपर्ट-
कोई इंडिकेशन भी नहीं जिससे रहे अलर्ट।

–अक्ष मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी गीत

रोते नयन हँसाओ!

❑'नीरज'

तुम झूम झूम गाओ, रोते नयन हँसाओ,
मैं हर नगर डगर के काँटे बुहार दूँगा!

भटकी हुई पवन है,
सहमी हुई किरन है,
न पता कहीं सुबह का,
हर ओर तम गहन है,
तुम द्वार द्वार जाओ, परदे उघार आओ,
मैं सूर्य-चाँद सारे भू पर उतार दूँगा।
तुम झूम झूम गाओ।

गीला हरेक आँचल,
टूटी हरेक पायल,
व्याकुल हरेक चितवन,
घायल हरेक काजल,
तुम सेज सेज जाओ, सपन नये सजाओ,
मैं हर कली कली के पी को पुकार दूँगा।
तुम झूम झूम गाओ।

विधवा हरेक डाली,
हर एक नीड़ खाली,
गाती न कहीं कोयल,
दिखता न कहीं माली,
तुम बाग बाग जाओ, हर फूल को जगाओ,
मैं धूल को उठाकर सबको बहार दूँगा।
तुम झूम झूम गाओ।

मिट्टी उजल रहीं है,
धरती सँभल रही है,
इन्सान जग रहा है,
दुनियाँ बदल रही है,
तुम खेत खेत जाओ, दो बीज डाल आओ,
इतिहास से हुई मैं गलती सुधार दूँगा।
तुम झूम झूम गाओ।

(प्राण-गीत' से साभार)

जो तुम हँसो

❑अमृत खरे

जो तुम हँसो, बहार ही बहार खिलखिला उठें।
जो तुम हँसो, तो रति-अनंग संग मुस्कुरा उठें।

जो तुम हँसो, हजार दीपिकाएँ जगमगा उठें,
जो तुम हँसो, हजार तारिकाएँ झिलमिला उठें,
जो तुम हँसो, तो रौशनी के धार हरहरा उठें,
जो तुम हँसो, तो रति-अनंग संग मुस्कुरा उठें।

जो तुम हँसो, तो जलतरंग रंग में खनक उठें,
जो तुम हँसो, पखावजें दुगुन-तिगुन गमक उठें,
जो तुम हँसो, तो दिग्दिगन्त वृन्दगान गा उठें,
जो तुम हँसो, तो रति-अनंग संग मुस्कुरा उठें।

जो तुम हँसो, तो डाल-डाल गुनगुना उठें चमन,
मृदुल युगल अधर सरस दरस करें सुमन नमन,
जो तुम हँसो, सुगन्धियाँ अपार महमहा उठें,
जो तुम हँसो, तो रति-अनंग संग मुस्कुरा उठें।

जो तुम हँसो, तो बीन लूँ, बटोर लूँ, सहेज लूँ,
ये रौशनी, खनक, गमक, सुगन्ध प्राण में भरूँ,
जो तुम हँसो, समग्र अंग प्यार से नहा उठें,
जो तुम हँसो, तो रति-अनंग संग मुस्कुरा उठें।

('मयूर पंख' से साभार)

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज आदर्श नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज आदर्श नगर का ५६वाँ वार्षिकोत्सव तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती का १९४वाँ जन्मदिवस दि.८ से ११ फरवरी २०१८ तक आर्य समाज मंदिर में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रख्यात विद्वान् आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी (बिजनौर) के प्रवचन तथा श्री भानुप्रकाश आर्य (बरेली) के भजनोपदेश होते रहे। चारों दिन प्रातःकाल आचार्य सन्तोष कुमार वेदालंकार के आचार्यत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। अन्तिम सत्र में विद्वानों को सम्मानित किया गया तथा ऋषिभोज की सुचारु व्यवस्था की गई। उत्सव कार्यक्रमों का गीतात्मक संचालन श्री सतीश निझावन मंत्री आर्य समाज ने किया तथा श्री राजेन्द्र नाथ हूजा ने अध्यक्षता की। समारोह की व्यवस्था में श्री आत्मप्रकाश बत्रा पूर्व प्रधान का सराहनीय योगदान रहा।

108कुण्डीय यज्ञ एवं वेद कथा

सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट एवं जिला वेद प्रचार संगठन, लखनऊ के तत्वावधान में दि. २१ तथा २२ जनवरी २०१८ को आर्ष गुरुकुलम विद्या मंदिर जानकीपुरम लखनऊ में वार्षिकोत्सव, १०८ कुण्डीय देवयज्ञ एवं वेद कथा का बृहद् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। देवयज्ञ के सत्रप्रमुख थे- आर.के.शर्मा एवं अरविन्द गुप्त तथा संगोष्ठी के अध्यक्ष थे- राजेश्वर प्रसाद मिश्र एवं डॉ.सत्यकाम।

द्वितीय सत्र तपोनिष्ठ आचार्य स्व.ओजोमित्र शास्त्री को समर्पित था जिसके स्वागताध्यक्ष थे नवीन कुमार सहगल। ओजोमित्र जी के महान कार्यों और उद्देश्यों पर डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक 'आर्य लोक वार्ता' ने प्रकाश डाला। आपने कहा कि ओजोमित्र शास्त्री के कृतित्व को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। समारोह को स्वामी वीरेन्द्र सरस्वती, महात्मा प्रेममुनि, प्रताप कुमार साधक, मोहित शास्त्री तथा स्वामी केवलानंद सरस्वती आदि विद्वानों ने सम्बोधित किया। समारोह के संयोजक एवं अध्यक्ष आचार्य विश्वव्रत ने धन्यवाद प्रकाश किया। दोनों दिन ऋषिलंगर की व्यवस्था थी, जिसमें ग्रामीण जनता ने भी बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

कपड़ा कोठी के योगी का परिनिर्वाण

योगी उपाधि को चरितार्थ करते हुए 'कपड़ा कोठी' (नीलगिरि क्रासिंग, फैजाबाद रोड, लखनऊ) के संस्थापक स्वनामधन्य श्री निर्मल कुमार जैन ने दि. ०४.०२.१८ को रात्रि ९.३०बजे निर्वाण पद को प्राप्त किया। उल्लेखनीय है कि 'आर्य लोक वार्ता' के जनवरी २०१८ अंक में निर्मल कुमार जी के सम्बंध में प्रकाशित 'कपड़ा कोठी का योगी-निर्मल कुमार जैन' शीर्षक लेख उन्हें शनिवार, दि. ०३.०२.१८ को सायंकाल ९ बजे देखने को मिला था, उसे पढ़कर सन्तोष का अनुभव करते हुए रविवार सायं ९.३० बजे उन्होंने देहत्याग कर दिया।

सोमवार ५ फरवरी २०१८ को भैंसाकुण्ड शवदाह स्थल पर पूर्ण वैदिक विधि से उनका अन्त्येष्टि संस्कार कर दिया गया। सम्पूर्ण क्रिया महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रणीत संस्कार विधि के अनुसार वैदिक वैदिक विद्वान् डॉ.वेद प्रकाश आर्य (प्रधान सम्पादक आर्य लोक वार्ता) के आचार्यत्व में सम्पन्न हुई। २० किलो शुद्ध देशी घी तथा ४० किलो पतंजलि निर्मित हवन सामग्री का प्रयोग करते हुए १२१ मंत्रों से आहुतियाँ दी गईं। स्व.निर्मल जी के सभी पुत्रों ने मिलकर यह क्रिया पूरी की। आचार्य जी ने दाहकार्य पूरा होने के बाद शान्ति प्रार्थना कराई। तीसरे दिवस दिनांक ०७.०२.१८ को विश्वास खण्ड-३, गोमती नगर स्थित जैन परिवार के आवास पर शान्तिपाठ का यज्ञ किया गया; जिसमें शोकाकुल परिवार के स्त्री पुरुषों से परिसर भरा हुआ था।

आवास के बाहर पार्क में सम्यक् व्यवस्था के अन्तर्गत श्रद्धांजलि सभा हुई जिसमें आचार्य डॉ.वेद प्रकाश जी ने विस्तार पूर्वक निर्मल जी के महान् कार्यों और उपकारों पर प्रकाश डाला। आपने कहा- निर्मल कुमार एक व्यक्ति का नाम नहीं, वरन् एक विचारधारा का नाम है- वह विचारधारा है- आर्य संस्कृति की, राष्ट्रीय एकात्मवाद की। वे जाति, मत, पंथ की सीमाओं से परे एक योगनिष्ठ महापुरुष थे। अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने श्रद्धांजलि सभा में अपने शोकोद्गार व्यक्त किये।

योगेश मोहन की ८०वीं जयन्ती

आर्य समाज लालबाग के संरक्षक एवं जिला सभा के पूर्व प्रधान श्री योगेश मोहन का जन्म दिवस आर्य समाज लालबाग द्वारा उनके स्थान उद्गीथ भवन, ८ए, फैजाबाद रोड, लखनऊ में दि. ४ फरवरी २०१८ को वैदिक विदुषी डॉ.निष्ठा विद्यालंकार के आचार्यत्व में उल्लास के साथ मनाया गया। डॉ.मोहनलाल अग्रवाल मंत्री एवं मनीष आर्य प्रधान आर्य समाज लालबाग ने इस अवसर पर योगेश मोहन जी के सद्गुणों व वेदप्रचार में उनके सहयोग पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर आर्य समाज लालबाग द्वारा एक डायरी सभी को भेंट की गई जिसमें कुछ मुख्य विवरणों के अतिरिक्त ३१ सदस्यों के पते, कुछ भजन व वेद प्रचारकों के नाम हैं। अन्त में प्रसाद-भोजन सभी ने ग्रहण किया। *(सं.सू.-पाल प्रवीण)*

महिला शक्तिमण्डल का वसन्तोत्सव

अपनी विद्या और प्रखर मेधा से समाज को सुदीर्घकाल तक प्रभावित करने वाली विदुषी डॉ.शान्तिदेव वाला द्वारा संस्थापित 'महिला शक्ति मण्डल न्यास' के तत्वावधान में इस वर्ष भी वसंतोत्सव दि.३०.०१.१८ को प्रातःकाल १० से १ बजे तक श्रीमती वीना गौतम के आवास १०२, आराधना अपार्टमेंट, महानगर, सेक्टर सी में मनाया गया जिसमें मंडल की समस्त सदस्याओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पूर्व स्थापित परम्परा के अनुरूप वैदिक यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ की समाप्ति पर यजमान दम्पति को आशीर्वाद और शुभकामनाएँ अर्पित की गईं। संयोगवश, इसी तिथि को वीना गौतम-प्रदीप गौतम की वैवाहिक वर्षगाँठ भी थी, जिसके कारण वसंतोत्सव के कार्यक्रम में विशेष मिठास घुल मिल गई। सरस्वती पूजन, भजन गायन आरती पाठ स्वल्पाहार इत्यादि कार्य कलाप काफी देर तक चलते रहे। मंडल की अध्यक्षा श्रीमती गीता गुप्त ने सभी को धन्यवाद दिया। श्रीमती रजनी कंसल, हेमा तिवारी, अर्चना चौधरी, वीना सिंह, शशि कुकरेजा, रचना माथुर, मीना रस्तोगी इत्यादि देवियों की सक्रियता एवं सहयोग भावना प्रशंसनीय थी।

आइए, ठाकुर विक्रम सिंह का स्वागत करें

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-2018

मंगलवार, दि.27.03.18, सायं 5 बजे से 9 बजे तक
राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ

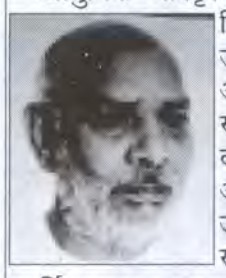

आधुनिक परिदृश्य में एक उभरता हुआ नाम है-ठाकुर विक्रम सिंह- जो अपनी उदारता, त्याग, कर्मठता और विद्वता के कारण सर्वत्र चर्चित हो रहा है। ठाकुर विक्रम सिंह ने आर्य हिन्दू जनता में नये उत्साह और उमंग का संचार कर दिया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के वंश परम्परा से भक्त, अनुयायी ठाकुर विक्रम सिंह का उद्देश्य भारतीय संस्कृति सभ्यता का पुनरुत्थान एवं भारत को विश्वगुरु के आसन पर पुनः प्रतिष्ठित करना है।

समारोह की अध्यक्षता के लिए कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य, पूर्व प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली को आमंत्रित किया गयाहै। समारोह में पधार कर ठाकुर साहब का अभिनन्दन करने हेतु आप सादर आमंत्रित हैं।

समारोह में योगनिष्ठ इं.जे.पी.अग्रवाल, गायत्री लोक हरिद्वार (पूर्व मुख्य अभियंता, सिंचाई विभाग), भारत विख्यात वेद विदुषी डॉ.निष्ठा विद्यालंकार एवं आचार्य विश्वव्रत सहित सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में विशिष्ट योगदान करने वाले कतिपय अन्य व्यक्तित्व भी सम्मानित किये जायेंगे। इस अवसर व्यंग्य सम्राट श्री महेशचन्द्र द्विवेदी (पूर्व पुलिस महानिदेशक, उ.प्र.) की अध्यक्षता में हिन्दी के चुनिन्दा कवि अपना काव्यपाठ प्रस्तुत करेंगे।

श्रीमती मुनेश्वरी देवी दिवंगत

श्रीमती मुनेश्वरी देवी धर्मपत्नी- प्रताप कुमार 'साधक' का ६९ वर्ष की आयु में ४ जनवरी २०१८ को निधन हो गया। लगभग दस वर्ष पूर्व दोनों किडनी खराब हो जाने के पश्चात् दवाओं तथा बाद में डायलिसिस की सहायता से जीवन चलता रहा। इसके पूर्व अपने पति के साथ योगधाम, हरिद्वार में ८ वर्ष तक रहकर सतत् योगसाधना, स्वाध्याय, सत्संग में जीवन का स्वर्णिम काल बिताया। इसके पूर्व भी स्वामी सत्यपति परिव्राजक के रोजड़ स्थित आश्रम व द्रोणस्थली मन्या गुरुकुल देहरादून में आयोजित उच्चस्तरीय योग साधना शिविर में भाग लेकर साधना को आगे बढ़ाया। ऐसी धर्म परायणा विदुषी के निधन से आर्यजगत की गहरी क्षति हुई है। आर्य लोक वार्ता श्रीमती मुनेश्वरी देवी को श्रद्धांजलि अर्पित करता है, साथ ही श्री प्रताप कुमार साधक की सेवाभावना तथा कर्तव्य परायणता की सराहना करता है क्योंकि वैदिक विद्वान् श्री साधक ने अपनी सहधर्मिणी की सेवा एवं उपचार में रात दिन एक करके कर्तव्य पालन का अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है।

नहीं रहीं श्रीमती निर्मला बंसल

अलीगंज वैदिक सत्संग की प्रमुख सदस्या श्रीमती निर्मला बंसल का ८४ वर्ष की आयु में निधन उनके निवास स्थान पर दि.८ फरवरी २०१८ को प्रातः हो गया। उनकी स्मृति में शांतियज्ञ व श्रद्धांजलि सभा १२ फरवरी को श्री सेवक राम जी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुई। वैदिक यज्ञ में सभी पारिवारिक सदस्यों तथा उपस्थित लोगों ने आहुतियाँ दीं। सेवक राम जी ने उपनिषदों तथा गीता का संदर्भ देते हुए श्रीमती निर्मला बंसल की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। श्री पाल प्रवीण ने श्रीमती निर्मला बंसल की ईश्वर भक्ति, यज्ञ के प्रति समर्पण, सुन्दर भजन सुनाने की तथा होनहार बच्चों को अपने स्तर से पुरस्कृत करने जैसे श्रेष्ठ कर्मों की सराहना की।

मदनमोहन जोशी की प्रथम पुण्य तिथि

२७.०१.२०१८। आर्य समाज के दीवाने, गायक, लेखक तथा उपदेशक पंडित मदनमोहन जोशी की प्रथम पुण्यतिथि पर आर्य समाज आदर्श नगर में यज्ञ, हवन तथा ऋषिभोज का आयोजन किया गया। श्री सतीश निझावन, मंत्री आर्य समाज ने गीतात्मक कार्यक्रम का संचालन किया। श्री आत्मप्रकाश बत्रा ने सम्पूर्ण व्यवस्था को सुचारु रूप दिया। समारोह में पं.प्रताप कुमार साधक, आचार्य सन्तोष कुमार वेदालंकार तथा डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक आर्य लोक वार्ता के प्रवचन हुए तथा जोशी जी की पुत्री श्रीमती सुमन कुमारिया ने भजन प्रस्तुत किया।

डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने जोशी जी की स्मृति को सजीव करते हुए स्वरचित कविता के कुछ पंक्तियां प्रस्तुत कीं-

आस्था से भरपूर थे, मन में बड़ी लगन।
करते थे नियमबद्ध, वे संध्या और हवन।।
ढोलक की थाप पर हो जाते थे मगन।
गायन से गुँजा देते थे धरती तथा गगन।।
नाम मदनमोहन ही, सद्गुण का धाम है।
जोशी जी आपको, मेरा शत शत प्रणाम है।।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी. पिंटेक

E-mail - aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य – 100 रु. वार्षिक
होता सदस्य – 1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक – 15,000 रु.
प्रतिष्ठापक – 50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
विश्वमित्र, एडवोकेट, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी–2, हिमांशु सदन, 5–पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.–इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

होली की इन्द्रधनुषी छींटें

राजनीति सत्तापक्ष

रामनाथ कोविंद
शिला की शीतल छाँव
दीपक मिश्र
न्याय दिवाकर
सुमित्रा महाजन
प्रत्युत्पन्ना
नरेन्द्र दामोदर मोदी
चारिउ खण्ड तपै जस भानू
अमित शाह
आज का चाणक्य
राजनाथ सिंह
महा प्रबंधक
अरुण जेटली
बजटाधिपति
सीतारमण
असुर मर्दिनी
सुषमा स्वराज
संकट मोचनी
स्मृति ईरानी
अमेठी दीवानी
किरेन रिजजू
सुमित्रानन्दन
अटल बिहारी वाजपेयी
अपराजेय
लालकृष्ण आडवाणी
अवसर बीते
यशवन्त सिन्हा
क्षोमवंत
शत्रुघ्न सिन्हा
विक्षोपवंत
राम नाइक
चरैवेति
योगी आदित्यनाथ
दानव दलन
सुब्रमण्यम स्वामी
स्वपथगामी
उमा भारती
योगाग्नि
मनोहरलाल खट्टर
कड़ी मूँछ मन्द मुस्कान
शिवराज सिंह चौहान
शंखध्वनि
वसुन्धरा राजे
राजश्री
मनोज तिवारी
दिल्ली हमारी

राजनीति प्रतिपक्ष

सोनिया गांधी
मोहाविष्टा
राहुल गांधी
सुपर जैकेट
प्रियंका वाड्रा
सम्पति सलिल
मनमोहन सिंह
कहाँ गये वे दिन
शशि थरूर
किसका कुसूर
तेजस्वी यादव
प्रथम ग्रासे
मुलायम सिंह यादव
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे
अखिलेश यादव
घर का चिराग
डिम्पल यादव
यदन्तरं तद् बाह्यं
शिवपाल यादव
मन की मनही माँहि रही
रामगोपाल यादव
नाच्यो बहुत गोपाल
नितीश कुमार
बसन्त
शरद यादव
हेमन्त
लालू प्रसाद यादव
पतझड़
राबड़ी देवी
निसिदिन बरसत नैन
अरविन्द केजरीवाल
एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति
अलका लाम्बा
दीपशिक्षा
कुमार विश्वास
शिलालेख
खड़के
बात बिन भड़के
रेणुका चौधरी
कल हासिनी
शहाबुद्दीन
नख व्याघ्र
चिदम्बरम
मेघाडम्बरं
कांति चिदम्बरम
पूर्वाभ्यासं
कपिल सिब्बल
शकुनि
स्वामी अग्निवेश
कपिल मुनि
ए. राजा
जान बची लाखों पाये

सामाजिक

अन्ना हजारे
अपनों से हारे
रजत शर्मा
रजत शिखर
वेद प्रताप वैदिक
सत्यान्वेषी
स्वामी रामदेव
उद्योग पर्व
आचार्य बालकृष्ण
मैं नहिं माखन खायो
श्रीरविशंकर
काँटा लगे न कंकर
मोरारी बापू
एक भरोसो एकबल
आसाराम बापू
कामकेतु
राम रहीम
न राम न रहीम
हनीप्रीत
मधुकामिनी

साहित्य

गोपाल दास नीरज
युग प्राण
डॉ. चन्द्रपाल शर्मा
ध्वान्त निवारक
डॉ.कन्हैया सिंह
आलोक शिखर
सदानन्द गुप्त
आनंद स्रोत
डॉ.उषा सिन्हा
ज्योतिष्मती
अमृत खरे
अमृत संधान
संजय माथुर
अमृत संचार
अम्बिका प्रसाद ओझा
जजमेंट आजतक
कृष्णा जी
नवोन्मेष
हरिओम शर्मा
नयी आरती
अनूप श्रीवास्तव
व्यंग्य विभव
उमेश राही
अथक बटोही
कैलाश निगम
आह्वान
गौरीशंकर वैश्य विनम्र
बालेन्दु
रामा आर्य रमा
गौरव भारती
महेशचन्द्र द्विवेदी
व्यंग्य सम्राट
नीरजा द्विवेदी
ज्ञान प्रसारिणी
विनोदिनी रस्तोगी
कविता कोकिला
दयानन्द जड़िया
सुबोध
श्रीश रत्न पाण्डेय
छक छक छुक छुक
प्रत्यूष रत्न पाण्डेय
सेवा व्रती
मधुकर अस्थाना
मन मधुवन
नरेन्द्र भूषण
सत्यं शिवं
आभा मिश्र
सजग लेखनी

संस्कृति

पीयूष कान्त
महाप्राण
जे. के. श्रीवास्तव
तन्मात्रा
मदनगोपाल सिंहल
मूलाधार
मीना दीक्षित
याज्ञिक
जवाहरलाल शाह
शहंशाह
ठाकुर विक्रम सिंह
जन नायक
आनन्द कुमार आर्य
कर्मयोगी
ज्वलंत कुमार शास्त्री
वैदिक पथिक
दीनानाथ शास्त्री
सरस्वती पुत्र
सोमदेव शास्त्री मुम्बई
वेदार्थ प्रदीप
विनय आर्य
दिल्ली पति
महाशय धर्मपाल आर्य
आर्षगिरा
वीरेन्द्र कुमार वीरजी
वीर बसंत
रणवीर चौधरी
प्रणवीर
श्री नेतराम आर्य
अग्निमीडे
शचीन्द्र मिश्र
आनन्द धाम
राजकुमार शास्त्री
वैदिक मसीहा
गुरुप्रसाद मिश्र गांधी
विशुद्ध विज्ञानं
सुनील कुमार सारस्वत
सारस्वत चंदन
अवधेश शुक्ल
काव्य प्रसून
डॉ.निष्ठा विद्यालंकार
वैदिक शारदीया
कमलेश पाल
शुभ्र ज्योत्स्ना
पाल प्रवीण
पर्यावरण विशारद
प्रतिज्ञा शास्त्री
देवी शिव
डॉ.मोहनलाल अग्रवाल
भाषा प्रतिष्ठापक
वीना गौतम
वीणा धारिणी
प्रदीप गौतम
मधुर मधुर दीपक जल
गीता गुप्ता
कर्मण्येवाऽधिकारस्ते
डोरी लाल आर्य
सूत्रधारक
बाल गोविन्द पालीवाल
करो योग रहो नीरोग
शिवधर मौर्य
धर्मचर
कृष्णस्वरूप चौधरी
प्रशासन
सुधा चौधरी
अनुशासन
डॉ.इन्द्रदेव गुप्त
ज्ञान गौरव
श्रीमती कान्ति कुमार
अक्षयकान्ति
राजेश प्रकाश शर्मा
अग्निव्रत
बाँके बिहारी हर्ष
स्ववश बिहारी
वांछित रस्तोगी
शुभंकर
सत्य प्रकाश आर्य
अपनी राह चलाचल
प्रताप कुमार साधक
स्थिति प्रज्ञ
आत्मप्रकाश बत्रा
गुरुतर भार
सतीश निझावन
गुरुग्राम धाम
रण सिंह
कुशल सारथी
अरुण विरमानी
पृथ्वीपुत्र
अमिता विरमानी
सुसंस्कृता
सुबोध सक्सेना
स्वविवेक
विद्यासागर
ईश्वर चन्द्र
आनन्द मनीषी
शिव संकल्प
प्रेम मुनि
यत्र तत्र
विश्वव्रत शास्त्री
वैदिक मण्डलेश्वर
आर.के.शर्मा
संता विभूतयः
डॉ.सत्यकाम
दुनिया गोल है
यशोदा शर्मा
श्रद्धामूर्ति
कविता सहगल
सत् प्रेरणा
नवीन कुमार सहगल
जीवंत
अमृतमुनि
अमृत पथ
रुक्मिणी आर्य
आश्रम गरिमा
सुरेन्द्र शर्मा
तोड़ो कारा
चन्द्रप्रकाश शुक्ल
जय शिव शंभु
प्रेमप्रकाश शुक्ल
गंगा तोरे
जे.पी.अग्रवाल
हृदय कमल
अनीता सिंह
बढ़ते कदम
डॉ.प्रशिषा
तुम पै बड़ी जिम्मेदारी

कला

संजयलीला भंसाली
वार न जाये खाली
कंगना रनावत
कोमल हूँ कमजोर नहीं
दीपिका पादुकोण
चहुँओर सजे दीवाली

आ.लो.वा.